A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 29 सितंबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 32 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

आशियाना हरा रहे...

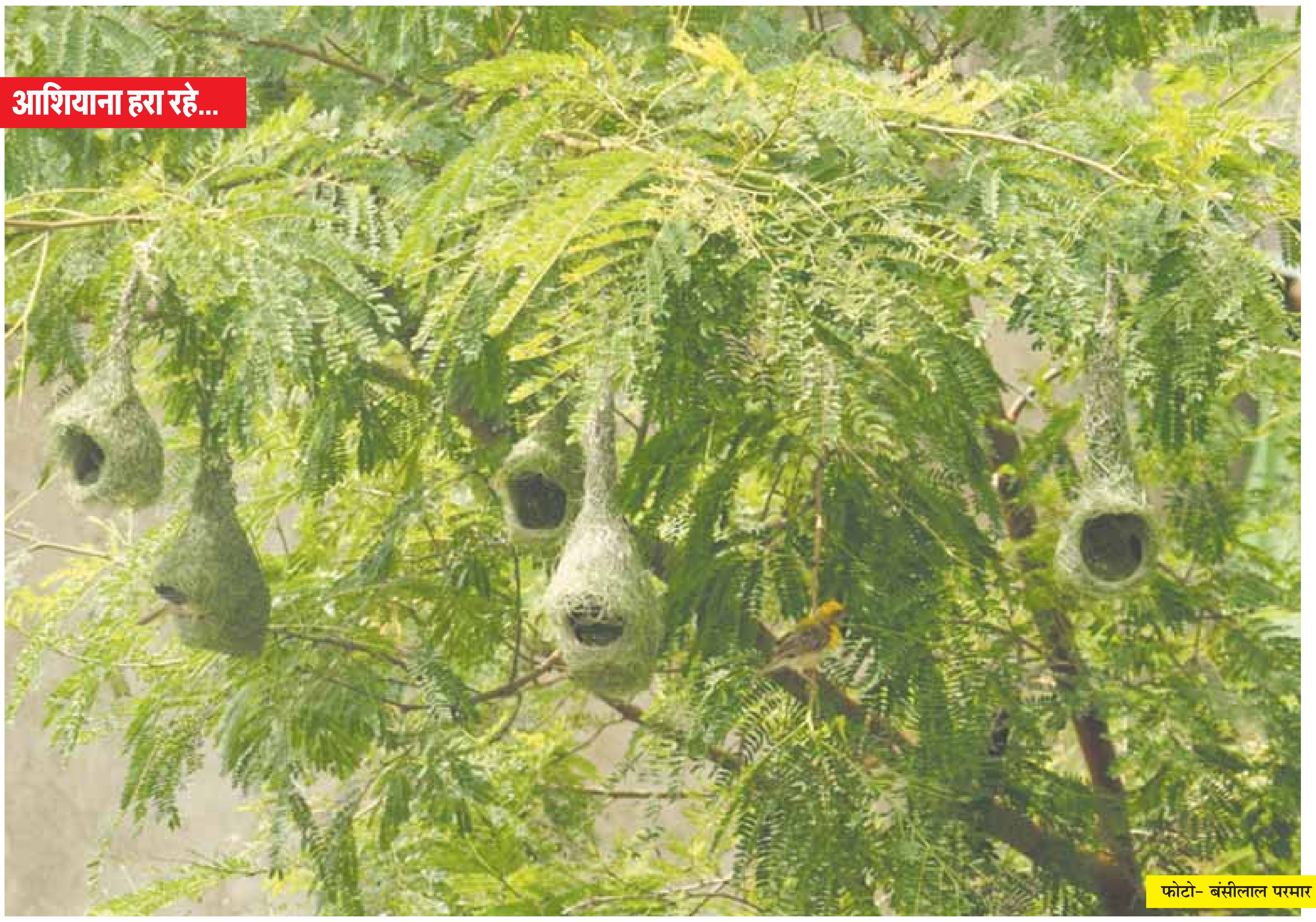

फोटो- बंसीलाल परमार

सुप्रभात

एक नाव क्या चली
नदी फिर हंसना सीख गई
लहरों को अपनी मुट्ठी में
कसना सीख गई

भंवर भंवर से मिली
झूमकर बोली बतियाई
रह रह अपने हालचाल पर
खुद ही इतराई

नए सिरे से दिल दिमाग़ में
बसना सीख गई

बढ़ते शैवालों की
चुप चुप काई काट गई
इक लड़की ने पहनी जैसे
साड़ी नई नई

अपने ही पानी में खुलकर
धंसना सीख गई

पता नहीं क्यों अब तक
खुद में भूली बिसरी थी
दुख की एक बड़ी सी छाया
मन पर पसरी थी

रेशम का इक जाल मिला
तो फंसना सीख गई।

-यश मालवीय

आतंकियों ने हिमाकत की....

... तो मोदी पाताल में भी खोज निकालेगा

जम्मू में गरजे पीएम मोदी

बोले-आतंक के आकाओं को यह पता है

पीएम बोले-

यह नया भारत है, जो आतंकियों से सख्ती से निपटता है

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक दलों के नेता जोर शोर से चुनाव प्रचार में जुटे हैं। इसी बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी राज्य में तीसरे चरण के चुनाव के प्रचार के लिए जम्मू पहुंचे। यहां पर एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। पीएम मोदी ने चुनावी रैली को संबोधित करते हुए शुरुआत में कहा कि ये चुनाव जम्मू-कश्मीर का भविष्य चुनने के लिए है। आज शहीद वीर सरदार भगत सिंह की जन्म जयंती भी है। देश के करोड़ों युवाओं की प्रेरणा, भगत सिंह जी को मैं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। पीएम मोदी ने कहा कि जम्मू का बहुत बड़ा हिस्सा बॉर्डर से सटा है। आप वो दौर याद कीजिए, जब सीमापार से आए दिन गोले बरसते थे, आए दिन मीडिया में ब्रेकिंग न्यूज चलती थी कि एक बार फिर सीजफायर का उल्लंघन हुआ है। उधर से फायरिंग होती थी और कांग्रेस वाले सफेद झंडा दिखाते थे लेकिन जब बीजेपी की सरकार ने गोली का जवाब गोले से देना शुरू किया तो उधर वालों के होश ठिकाने आ गए। पीएम मोदी ने सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर भी बयान दिया।

कश्मीर के कुलगाम में मुठभेड़, दो आतंकी ढेर

4 सुरक्षाकर्मी घायल

- इनमें 3 सेना के जवान और एक एएसपी, ऑपरेशन जारी

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर में कुलगाम के आदिगाम देवसर इलाके में शनिवार सुबह से सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ चल रही है। दोपहर में सुरक्षाबलों ने दो आतंकियों को मार गिराया। इलाके में दो-तीन आतंकियों के छिपे होने की आशंका थी। सेना के 3 जवान और

कुलगाम के एएसपी घायल हुए हैं। चारों को इलाज के लिए श्रीनगर शिफ्ट किया गया है। कश्मीर जोन पुलिस ने शनिवार सुबह 7.05 बजे ङ्क पर पोस्ट के जरिए मुठभेड़ की जानकारी दी। बताया कि पुलिस और सेना ने जॉइंट ऑपरेशन के तहत आदिगाम में सर्च ऑपरेशन शुरू किया। इसी दौरान आतंकियों ने उन पर फायरिंग कर दी, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गई।

कालाबाजारी करने वालों से सख्ती से निपटेगी सरकार : मुख्यमंत्री

जनप्रतिनिधियों के साथ राजस्व अमला करेगा फसल क्षति आंकलन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि उर्वरक की मांग बढ़ने पर कालाबाजारी, अवैध भंडारण, नकली उर्वरक निर्माण की संभावना रहती है। पुलिस का सहयोग लेते हुए निरीक्षण और चेकिंग की व्यवस्था को बढ़ाया जाए। कालाबाजारी करने वालों, मिलावट, मिस ब्रांडिंग और नकली उर्वरक खपाने वालों पर कठोरतम कार्रवाई की जाए। उर्वरक अवैध परिवहन पर नियंत्रण के लिए एक जिले से दूसरे जिले में उर्वरक मूवमेंट पर सतत् निगरानी रखें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास से सोयाबीन उपार्जन, खाद उपलब्धता और वितरण की वीडियो-कॉन्फ्रेसिंग में कलेक्टर -कमिश्नर से चर्चा कर उक्त निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि खरीफ 2024-25 के लिए प्रदेश में खाद की पर्याप्त उपलब्धता है। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का प्राइस सपोर्ट स्कीम में मध्यप्रदेश को सोयाबीन उपार्जन की दी गई स्वीकृति के लिए आभार व्यक्त करते हुए प्रदेश में उपार्जन के समुचित बेहतर प्रबंध करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जाए ताकि आवश्यकतानुसार डीएपी के स्थान पर एनपीके, लिक्विड नैनो यूरिया के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किसानों को ज्यादा से ज्यादा जानकारी दी जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कलेक्टरों को निर्देशित किया कि राजस्व अमला जनप्रतिनिधियों के साथ फसलों की क्षति आंकलन सुनिश्चित करें। खाद भंडारण के लिए डबल लॉक की आवश्यकता होने पर कृषि उत्पादन आयुक्त से समन्वय कर आवश्यक कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अमानक स्तर का खाद-बीज विक्रय, भंडारण और परिवहन करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रबी 2024-25 के लिए खरीफ 2024 के अनुसार ही उर्वरक वितरण के पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि प्रदेश में रबी 2024-25 के लिए भी पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध हैं। सभी जिला कलेक्टर बेहतर तैयारी कर लें, वितरण व्यवस्था में कोई गड़बड़ी न हो इसके लिए वरिष्ठ अधिकारियों से समन्वय कर कार्रवाई सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में प्रधानमंत्री श्री मोदी के विज़न अनुरूप प्राकृतिक खेती को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दिया जाए। एनपीके और लिक्विड नैनो यूरिया के उपयोग के लिए किसानों को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहित करें।किसानों द्वारा इनके उपयोग से देश की अन्य राष्टों पर निर्भरता भी कम होगी।

मुख्यमंत्री ने कानून-व्यवस्था और सड़कों के रख-रखाव के संबंध में दिए निर्देश

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कमिश्नर-कलेक्टर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में वर्षा से प्रभावित सड़कों की तत्काल मरम्मत सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सड़कों पर घूमते मवेशी, ओवरलोडिंग आदि के संबंध में भी पुलिस प्रशासन को सतर्क रहने और आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। समत्व भवन से हुई वीडियो कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रदेश में कानून-व्यवस्था बनाए रखने में किसी भी तरह की लापरवाही न हो, आने वाले त्यौहारों में शांति व्यवस्था और सौहार्द कायम रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्रावास, आश्रम शालाओं, स्कूल, कॉलेजों के निरीक्षण के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राजस्व न्यायालय के प्रकरणों में हुए कार्य की सराहना करते हुए कहा कि शेष बचे प्रकरणों की भी समय-सीमा निर्धारित कर निराकरण किया जाए।

अब सुप्रीम अदालत में पहुंचा तिरुपति 'लड्डू में पशु चर्बी' का विवाद

- सोमवार को होगी सुनवाई, बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने लगाई याचिका

नई दिल्ली (एजेंसी)। तिरुपति के प्रसिद्ध लड्डुओं में कथित रूप से पशु चर्बी के इस्तेमाल का विवाद सुप्रीम कोर्ट पहुंच चुका है। देश की शीर्ष अदालत में इस मामले पर सोमवार को सुनवाई होगी। यह याचिकाएं भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी और पूर्व तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम के अध्यक्ष वाईवी सुब्बा रेड्डी द्वारा दायर की गई हैं। सुब्बा रेड्डी वाईएसआर कांग्रेस पार्टी से राज्यसभा सांसद हैं।

हरियाणा में योगी ने कांग्रेस को ठहराया विभाजन-आतंकवाद का जिम्मेदार

मंदिर के लिए हिंदू लड़े 76 लड़ाइयां

बोले- 370 हटने के बाद मौलवी कहते हैं राम-राम

फरीदाबाद (एजेंसी)। हरियाणा में विधानसभा चुनाव को लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को फरीदाबाद पहुंचे। फरीदाबाद के विधान सभा क्षेत्र में चुनावी प्रचार के दौरान योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस को देश के विभाजन के लिए और आतंकवाद के लिए जिम्मेदार ठहराया। योगी आदित्यनाथ ने कहा- जम्मू-कश्मीर से 370 हटने के बाद अब मौलवी भी राम-राम कहते हैं। राम मंदिर का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिए हिंदुओ ने 76 लड़ाइयां लड़ी हैं। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने हरियाणा में कांग्रेस की पिछली सरकारों पर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के राज में भू-माफिया सक्रिय थे लेकिन भाजपा ने विकास के नए आयाम स्थापित किए। योगी आदित्यनाथ की रैली में लोगों ने जय श्रीराम के

नारे लगाए। जनसभा को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वह रामलला की धरती से फरीदाबाद पहुंचे हैं। उन्होंने कहा- लाखों हिन्दू,सिखों ने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिए बलिदान दिया। मगर कांग्रेस ने विवाद खड़ा करवाकर राम मंदिर नहीं बनने दिया। कांग्रेस जिस विवाद का समाधान 65 साल में नहीं करवा पाई, उसे पीएम मोदी ने समाप्त कर दिया।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 29 सितंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

हमने कभी इंडिया आउट नीति नहीं अपनाई है...

भारत दौरे से पहले बदले मालदीव के राष्ट्रपति मुइज्जू के सुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के भारत के प्रति सुर बदल गए हैं। मुइज्जू ने कहा कि उन्होंने कभी भी 'इंडिया आउट' नीति का पालन नहीं किया है। हालांकि उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने भारतीय सैनिकों को मालदीव छोड़ने का आदेश दिया, क्योंकि विदेशी सेना की मौजूदगी गंभीर समस्या है और उनके देश के लोग विदेशी सैनिक अपनी जमीन पर नहीं चाहते हैं। मुइज्जू ने ये बातें अपने भारत दौरे के कुछ समय पहले कही हैं। मालदीव के राष्ट्रपति अगले महीने, अक्टूबर में दिल्ली आ सकते हैं। मुइज्जू ने

मालदीव के समाचार पोर्टल से बातचीत में कहा, 'हम कभी भी किसी एक देश के खिलाफ नहीं रहे हैं। हमने कभी इंडिया आउट की बात नहीं की लेकिन ये बात है कि मालदीव के लोग अपनी जमीन एक भी विदेशी सैनिक नहीं चाहते और इस भावना का हमने सम्मान किया। मोहम्मद मुइज्जू इस समय संयुक्त राष्ट्र महासभा के 79वें सत्र में भाग लेने के लिए अमेरिका में हैं। मुइज्जू की आधिकारिक यात्रा जो सितंबर में नहीं हो सकी थी। अब अगले महीने की योजना बनाई जा रही है। सूत्रों ने कहा कि यह अक्टूबर के दूसरे सप्ताह की शुरुआत में हो सकती है। हालांकि, दोनों पक्ष अभी भी सबसे अच्छी पारस्परिक रूप से सुविधाजनक उपलब्ध तिथियों पर काम करने की कोशिश कर रहे हैं।

कांग्रेस ने जारी किया 'हाथ बदलेगा हालात' मेनिफेस्टो

- किसानों-महिलाओं और युवाओं से पार्टी ने किए बड़े वादे

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले कांग्रेस ने शनिवार को चंडीगढ़ में अपना विस्तृत घोषणापत्र 'हाथ बदलेगा हालात' जारी किया। इस घोषणापत्र में किसानों, महिलाओं, कर्मचारियों और युवाओं के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं का वादा किया गया है। घोषणापत्र को पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उदय भान की उपस्थिति में जारी किया गया। 40 पन्नों के इस घोषणापत्र में 25 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा है। महिलाओं

को हर महीने 2,000 रुपये और सतलुज-यमुना लिंक नहर से पानी लाने का वादा किया गया है। 90 सदस्यीय विधानसभा के लिए चुनाव 5 अक्टूबर को होंगे और नतीजे 8 अक्टूबर को घोषित किए जाएंगे। कांग्रेस ने तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले 700 से अधिक किसानों के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने का वादा किया है। कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश की तर्ज पर राज्य में पुरानी पेंशन योजना लागू करने का भी वादा किया है। इस महीने की शुरुआत में कांग्रेस ने सात गारंटी पूरी करने की घोषणा की थी।

विश्व हृदय दिवस आज

हजारों दिल का ख्याल रख रहा इंदौर हार्ट क्लब

- दिल को दुरुस्त रखने डॉ भरत रावत की पहल है आईएचसी

अम्बुज माहेश्वरी

भोपाल। दिल से जुड़ी बीमारियों के बढ़ते इस दौर में व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए हजारों दिलों का ख्याल रखा जा रहा है। सुनने में यह बात आश्चर्यजनक लगती है न, लेकिन ऐसा संभव हो पा रहा है प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में, जहां इंदौर हार्ट क्लब से करीब दस हजार लोग जुड़े हुए हैं और यहां साझा होते है दिल के नुस्खे। इंदौर के प्रतिष्ठित हार्ट स्पेशलिस्ट डॉ भरत रावत ने बीते साल 14 जून को इंदौर हार्ट क्लब के नाम से व्हाट्सएप ग्रुप तैयार किया था। इस ग्रुप के जरिए दिल से जुड़ी बातें शुरू हुई और हर तीन महीने में क्लब की मीटिंग का आयोजन और इसमें सदस्यों को आमंत्रित कर विषय विशेषज्ञों से रुबरु होने का अवसर दिया जाना सुनिश्चित हुआ। इंदौर हार्ट क्लब के माध्यम से अब तक

10 ग्रुप में करीब दस हजार लोग जुड़ चुके हैं और हर सप्ताह दिल के नुस्खे पर बात होती है। डॉ रावत सहित अन्य कई डॉक्टर ग्रुप के एडमिन हैं। इस ग्रुप की सबसे अहम बात यह है कि यहां स्वस्थ दिल रखने के नुस्खे निःशुल्क बताये जाते हैं और यहां सिर्फ स्वास्थ्य की बात होती है किसी प्रकार की दवा या किसी अस्पताल का प्रमोशन नहीं होता है। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हर तीन माह में होने वाली मीटिंग में सामान्य लोगों, दिल के रोगियों और उनके घर वालों को एक साथ शहर के अलग अलग अस्पतालों के डॉक्टर और अन्य एक्सपर्ट्स के साथ निःशुल्क मुलाकात कराते हैं। डॉ भरत रावत बताते हैं कि यह ग्रुप सीधे इलाज या दवाएं बदलने का माध्यम नहीं है यहां जुड़े लोग अपना इलाज अपने स्तर पर कराते हैं यहां हम दिल से संबंधित हर सप्ताह एक रोचक और उपयोगी जानकारी देते हैं। फिजिकल मीटिंग (प्रति तीन माह) की जानकारी भी इसमें दी जाती है।

ग्रुप की पांचवी मीटिंग आज, फिल्म अभिनेत्री भाग्यश्री आयेंगी

इंदौर हार्ट क्लब की पाँचवीं मीटिंग रविवार को विश्व हृदय दिवस पर आनंद मोहन माथुर सभागृह में आयोजित की गई है। मीटिंग में शामिल होने 800 से अधिक लोगों ने अपना निःशुल्क रजिस्ट्रेशन कर लिया है। इस मीटिंग में डॉ रावत की पुस्तक स्वस्थ जीवन शैली- स्वस्थ दिल का विमोचन फिल्म अभिनेत्री भाग्यश्री करेंगी।

दिल के नुस्खे, हर हफ्ते...हल्के-फुल्के

डॉ रावत की इस पहल से अब तक लगभग 10 हजार लोग जुड़ चुके हैं। सप्ताह में एक दिन प्रत्येक रविवार को एक जरूरी विषय पर जानकारी ग्रुप में डॉ रावत द्वारा दी जाती हैं। ब्लड प्रेशर कैसे मापा जाए, इलेक्ट्रॉनिक मशीन से रीडिंग का औसत कैसे निकाला जाए। स्वस्थ दिनचर्या का पालन करते हुए कैसे लोग अपने दिल को दुरुस्त रख सकते हैं ये सब जरूरी बातें ग्रुप में बताई जाती हैं। ग्रुप के अलावा फेसबुक लाइव, यू ट्यूब आदि पर भी डॉ रावत लोगों का मार्गदर्शन करते हैं। मीटिंग में शहर के नामी डॉक्टर खुद अपनी कहानी संक्षेप में सुनाते हैं तो कई मरीज अपनी लिखी कविताएं सुनाते हैं। मीटिंग में हास्य योगा,ध्यान, प्राणायाम के साथ साथ हार्ट क्विज संपन्न होते हैं। मरीजों की निःशुल्क जाँचे भी की जाती हैं।

निस्वार्थ भाव से सेवा में जुटे डॉ रावत

ग्रुप की होने वाली मीटिंग में डॉ रावत का व्याख्यान होता है। पिछली मीटिंग में अष्टावक्र की गीता (श्री श्री रवि शंकर) एवं इनर इंजीनियरिंग (सदगुरु) पर चर्चा हुई। ग्रुप से जुड़े मरीज, उनके परिजन एवं आम जन चर्चा में बताते हैं कि हमें समाज को कुछ न कुछ लौटाते रहना चाहिए इसी तर्ज पर डॉ रावत सर समाज को बहुत कुछ लौटा रहे हैं। वे निस्वार्थ भाव से स्वयं ग्रुप को न केवल मेंटेन रखते हैं बल्कि मीटिंग का जरिए बेहतरीन आयोजन के अवसर भी लोगों को दे रहे हैं। पूरी तरह निःशुल्क इन मीटिंग्स में लोगों को हेल्दी नाश्ते में अंकुरित अनाज, शुद्ध घी की केशर जलेबी, इंदौरी पोहा, उपमा , वाटरमेलन जूस,कॉफी आदि का प्रबंध भी डॉ रावत करवाते हैं।

गड्ढे में डूबने से तीन बच्चों की मौत

शिवपुरी में खेलते-खेलते गहराई में चले गए 6 बहनों से इकलौता भाई छिन गया

शिवपुरी (नप्र)। शिवपुरी में तीन बच्चों की गड्ढे में डूबने से मौत हो गई। शनिवार सुबह तीनों ही बच्चे खेलते-खेलते बस्ती से बाहर आए और गड्ढे में भरे पानी में नहाने लगे। इसी दौरान गहराई में चले जाने पर तीनों डूब गए। परिजन उन्हें निकालकर निजी अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बच्चों की उम्र 8 से 10 साल थी। 10 साल का बालक 6 बहनों में इकलौता भाई थी।

घटना जिले के कोलारस थाना क्षेत्र के निवोदा गांव में बंजारा समाज की बस्ती की है। शिवपुरी के निजी अस्पताल में बच्चों को मृत घोषित करने के बाद परिजन शवों को घर ले आए। जबकि उन्हें जिला अस्पताल जाने को कहा था। परिजन बच्चों का पोस्टमॉर्टम नहीं कराना चाहते हैं।

सूचना के बाद कोलारस एसडीओपी विजय यादव, एसडीएम और तहसीलदार समेत अन्य पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। उन्होंने परिजन को समझाया, लेकिन वे पोस्टमॉर्टम कराने की राजी नहीं हुए।

परिजन तीनों बच्चों के शव का पोस्टमॉर्टम कराने को राजी नहीं हुए। मौके पर पहुंचे प्रशासन और पुलिस के अधिकारियों ने उन्हें समझाइश दी।

दूसरे बच्चे दौड़कर गांव आए, परिजन को सूचना दी- जानकारी के मुताबिक तीनों बच्चे खेलते-खेलते गड्ढे में नहाने लगे। इसी दौरान वे गहराई में उतर गए और डूब गए। वहां मौजूद दूसरे बच्चों ने भागकर इसकी सूचना परिजन को दी। जिसके बाद मौके पर पहुंचे परिजन ने तीनों बच्चों को बाहर निकाला। उन्हें ट्रैक्टर से फौरन शिवपुरी के निजी अस्पताल ले जाया गया।

6 बहनों के बीच इकलौते भाई की मौत- जिन तीन बच्चों की इस हादसे में मौत हुई है। उनमें से 10 साल का नीरज 6 बहनों का इकलौता भाई था। बताया गया है कि धारा सिंह बंजारा के एक के बाद एक 6 बेटियां पैदा हुई थी। नीरज 7वीं संतान था। उसकी मौत के बाद परिवार सदमे में आ गया। वहीं दो बच्चे संजय और रवि बंजारा आपस में चचेरे भाई बताए जा रहे हैं।

मिट्टी के लिए अवैध रूप से खोदा था गड्ढा- जिस गड्ढे में तीन बच्चों की डूबने से मौत हुई, उसे बंजारा समाज के लोगों ने ही खोदा था। बताया जा रहा है कि बंजारा बस्ती के लोग यहां से लाल मिट्टी निकालकर उसे बेचने का काम करते हैं। बारिश के दौरान यहां पानी भर गया है।

ओडिशा के भद्रक में 48 घंटो के लिए इंटरनेट-ब्रॉडबैंड बैन

- सोशल मीडिया पोस्ट के कारण हिंसा भड़की थी, धारा 163 लगाई गई

भद्रक (एजेंसी)। ओडिशा के भद्रक जिले में शनिवार को प्रशासन ने 48 घंटे के लिए इंटरनेट और ब्रॉडबैंड सर्विस पर बैन लगा दिया। दरअसल, एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर एक समुदाय प्रदर्शन कर रहा था। आरोपी के

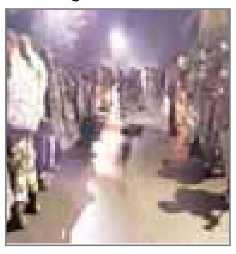

खिलाफ कार्रवाई में देरी से नाराज एक समुदाय के लोगों ने पुलिस पर पथराव किया, जिसके बाद प्रशासन ने 30 सितंबर सुबह दो बजे तक भद्रक जिले में इंटरनेट सेवा पर बैन लगा दिया। प्रदर्शन कर रहे लोगों का आरोप है कि एक युवक ने समुदाय विशेष के खिलाफ सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। शिकायत के बाद भी प्रशासन ने कार्रवाई नहीं की। विरोध में लोगों ने एक रैली निकाली।

इजरायली हमले में ढेर हुआ हिजबुल्ला चीफ नसरल्ला

बेरूत में हिजबुल्लाह के मुख्यालय में नसरल्लाह को बनाया निशाना

बड़ा झटका,इजरायल ने खत्म कर दी हिजबुल्लाह की टॉप लीडरशिप

तेल अवीव/बेरूत (एजेंसी)। इजरायल ने हवाई हमले में चरमपंथी संगठन हिजबुल्लाह नेता हसन नसरल्लाह को मार दिया है। इजरायली ने शनिवार को इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि हमले में हसन नसरल्लाह के साथ हिजबुल्लाह के कई शीर्ष कमांडर भी मारे गए हैं। नसरल्लाह की हत्या ईरान समर्थित लेबनानी मिलिशिया के लिए बड़ा झटका होगी। नसरल्लाह ने 32 वर्षों तक हिजबुल्लाह का नेतृत्व किया है। हाल ही में इजरायली हमले में हिजबुल्लाह के अधिकांश शीर्ष कमांडर मारे गए हैं। इन हमलों के बाद से संगठन की आंतरिक सुरक्षा पर सवाल उठे हैं, लेकिन नसरल्लाह की जगह लेना इन मौतों की तुलना में समूह के लिए कहीं अधिक बड़ी चुनौती होगी। बेरूस में कार्नेगी मिडिल ईस्ट सेंटर के डिप्टी रिसर्च डायरेक्टर मोहनद हेज अली ने नसरल्लाह की मौत की पुष्टि से पहले टाइम्स ऑफ इजरायल को बताया था कि इस हत्या से पूरा परिदृश्य बहुत बदल जाएगा। हेज अली ने कहा कि नसरल्लाह एक गोंद की तरह है, जिसने इस विशाल संगठन को एक साथ रखा है।

बेंगलुरु कोर्ट का निर्मला सीतारमण के खिलाफ एफआईआर का आदेश

- इलेक्टोरल बॉन्ड्स के जरिए जबरन वसूली का आरोप,कर्नाटक सीएम ने इस्तीफा मांगा

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु की एक स्पेशल कोर्ट ने 27 सितंबर को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया है। वित्त मंत्री पर इलेक्टोरल बॉन्ड्स के जरिए जबरन वसूली का आरोप लगाया गया है। जनाधिकार संघर्ष परिषद के आदर्श अय्यर

ने बेंगलुरु में शिकायत दर्ज कर केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण के खिलाफ कार्रवाई करने का निर्देश देने की मांग की थी। याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। अदालत ने बेंगलुरु के तिलक नगर पुलिस स्टेशन को एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया। अगली सुनवाई 10 अक्टूबर को होगी। अप्रैल 2024 में की थी शिकायत, जेपी नड्डा का भी नाम जनाधिकार संघर्ष परिषद ने अप्रैल में 42वीं कोर्ट में दायर याचिका में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, ईडी अधिकारियों, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, नलिन कुमार कटील, बीवाई विजयेंद्र के खिलाफ शिकायत की थी।

बिहार में कोसी का रौद्र रूप, दहशत में लाखों लोग

- 1968 के बाद सबसे अधिक जलस्तर,सभी 56 फाटक खुले
- कोसी नदी में 6.8 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने की आशंका

पटना (एजेंसी)। नेपाल में मूसलाधार बारिश के कारण कोसी नदी का जलस्तर खतरनाक रूप से बढ़ गया है। 1968 के बाद पहली बार कोसी बराज के सभी 56 फाटक खोल दिए गए हैं, जिससे 6,81,639 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। नेपाल से मिले त्राहिमाम संदेश के बाद बिहार और झारखंड के साहेबगंज जिला प्रशासन ने हाई अलर्ट जारी जारी किया है। प्रशासन की ओर से दियारा क्षेत्र में रहने वाले लोगों से तुरंत सुरक्षित स्थानों पर जाने की अपील की गई है। जल संसाधन विभाग के अनुसार नेपाल के जलग्रहण क्षेत्र और उत्तर बिहार में हो रही भारी बारिश के चलते राज्य में एक बार फिर बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। जल संसाधन विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार शाम कोसी नदी में 6.8 क्यूसेक पानी छोड़े जाने की आशंका है। पानी की यह मात्रा पिछले 56 सालों में सबसे अधिक होगी। वहीं, गंडक नदी में आज 31 वर्ष बाद छह लाख

गंडक नदी में भी 6 लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ा जाएगा

क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ा जा सकता है। इसे देखते हुए राज्य सरकार ने अगले 48 घंटों का अलर्ट जारी किया है। कोसी नदी में रिकॉर्ड डिस्चार्ज की आशंका को देखते हुए सुपौल जिला प्रशासन ने तटबंधों के अंदर और उसके आस-पास रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की अपील की है। इधर, भीमनगर कोसी बराज के सभी 56 फाटक खोल दिए गए हैं। सहरसा जिले में कोसी के जलस्तर में बढ़ोतरी को देखते हुये जिले के सिमरी बख्तियारपुर और सलखुआ प्रखंडों के तटवर्ती क्षेत्रों में लोगों से सतर्क रहने को कहा गया है।

छा गई वंदे भारत ट्रेन! विदेशों में बढ़ी खरीद की मांग

- कनाडा समेत कई देश खरीदना चाहते हैं वंदे भारत,डिजाइन-लागत में बेहतर
- 52 सेकंड में 100 किमी की रफ्तार,बुलेट ट्रेन इसके लिए 54 सेकंड लेती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। चिली, कनाडा, मलेशिया जैसे देशों ने भारत से वंदे भारत ट्रेनें खरीदने में दिलचस्पी दिखाई है। इसका सबसे बड़ा कारण इसकी लागत है। भारत में वंदे भारत को 120 से 130 करोड़ रुपए की लागत में बन रही है। जबकि ऐसी ही ट्रेनों की लागत 160-180 करोड़ रुपए है। बात अगर स्पीड की करें तो वंदे भारत आगे है। वंदे भारत को 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ने में सिर्फ 52 सेकंड लगते हैं। जबकि जापान की बुलेट ट्रेन इसके लिए 54 सेकंड लेती है। वंदे भारत का डिजाइन भी विदेशी ट्रेनों की तुलना में बेहतर है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक प्लेन की तुलना में सौ गुना कम शोर होता है, ईंधन की खपत भी बहुत कम है। भारतीय रेलवे भी अपने ट्रैक नेटवर्क और ट्रेनों की संख्या बढ़ाने पर भी विचार कर रहा है। वंदे भारत ट्रेनों की शुरुआत पहली बार 15 फरवरी 2019 को मेक इन इंडिया स्कीम के तहत की गई थी। इस समय देश में 102 वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं। वंदे भारत ट्रेनों का रूट देश के 280 से अधिक जिलों को आपस में जोड़ रहा है। 10 साल में 31 हजार से ज्यादा रेलवे ट्रैक जोड़े गए- रेल मंत्री रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि पिछले 10 साल में 31000 किमी से ज्यादा ट्रैक जोड़े गए हैं। 40 हजार किमी के ट्रैक और जोड़े जाने हैं। वैष्णव ने बताया कि बुलेट ट्रेन पर काम तेजी से चल रहा है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से हॉकी खिलाड़ी श्री विवेक सागर प्रसाद ने आज राजभवन में सौजन्य भेंट कर ओलंपिक कांस्य पदक विजेता भारतीय टीम द्वारा हस्ताक्षरित हॉकी भेंट की।

राज्यपाल श्री पटेल ने प्रो. सिंघई को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर का कुलगुरु किया नियुक्त

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के कुलगुरु के पद पर प्रोफेसर राकेश सिंघई को नियुक्त किया है। यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय शिवपुरी के निदेशक प्रोफेसर सिंघई का देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के कुलगुरु के पद पर कार्यकाल उनके कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से चार वर्ष की कालावधि अथवा 70 वर्ष की आयु जो भी पूर्वतर हो, रहेगा।

भोपाल में डेंगू का प्रकोप, कोलार की हालत खराब

स्कूल, पैथ लैब, अस्पतालों और आपूर्ति बाजार में भी मिला लार्वा, जुर्माना लगाया; 324 पॉजिटिव

भोपाल (नप्र)। भोपाल का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहां मच्छरों का आतंक नहीं हो। जगह-जगह जमा पानी मच्छरों के लिए ब्रीडिंग सेंटर बन गए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यही डेंगू के मच्छरों से होने वाली अन्य बीमारियों के प्रसार का प्रमुख कारण है। इसी बीच, कोलार में पिछले 10 दिन में स्कूल, अस्पतालों, सुपर बाजार और पैथ लैब तक से डेंगू के लार्वा मिले हैं। जिस पर मलेरिया विभाग व नगर निगम ने मिलकर जुर्माना भी लगाया है। वहीं, दूसरी तरफ जिला स्वास्थ्य विभाग, मलेरिया विभाग व नगर निगम को भी रोकथाम मुश्किल हो रही है। बता दें कि शुक्रवार को शहर में 9 डेंगू पॉजिटिव मिले हैं।

इस साल ज्यादा खतरा

डेंगू एक चक्रीय पैटर्न पर काम करता है। विशेषज्ञ इस साल ज्यादा खतरे की आशंका जता रहे हैं। राजधानी में साल 2019 में 1,893 मामले डेंगू के दर्ज किए गए थे। चक्रीय पैटर्न के अनुसार चार साल बीतने के बाद अब इस साल डेंगू का प्रकोप हो सकता है। हर साल अक्टूबर महीने में सबसे ज्यादा मामले आते हैं। ऐसे में ज्यादा सचेत रहने की जरूरत है। एक्सपर्ट्स की मानें, तो दीपावली के बाद डेंगू की गति पर ब्रेक लगने की उम्मीद है। फिलहाल, दिन में गर्मी और रात को तापमान कम है, जो डेंगू मच्छर के लिए पीक मौसम माना जाता है। अक्टूबर के बाद तापमान कम होता है। इसमें मच्छर पनपने की संभावना कम हो जाती है।

कहां, क्यों लगाया जुर्माना

- **रुद्राक्ष अस्पताल–** मंदाकिनी बी सेक्टर में स्थित यहां विभाग ने 10 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है। यहां कूलर में लार्वा मिला था।
- **श्री विनायक अस्पताल–** कोलार के डी सेक्टर स्थित इस अस्पताल पर पांच हजार रुपए के जुर्माना लगा है। यहां लिफ्ट की डग में डेंगू के लार्वा मिले थे।
- **बी केयर चाइल्ड अस्पताल –** दानिश कुंज स्थित इस अस्पताल के ऊपरी फ्लोर पर स्थित कूलर में लार्वा मिले। यहां 5 हजार रुपए का जुर्माना किया गया।
- **ऑर्थो केयर अस्पताल–** दानिश कुंज स्थित इस अस्पताल के अंडर ग्राउंड स्थित पानी की टंकी में लार्वा मिला, जिस पर विभाग द्वारा 10 हजार रुपए का जुर्माना किया गया।
- **आपूर्ति सुपर बाजार–** कोलार स्थित आपूर्ति सुपर बाजार के कूलर में डेंगू का लार्वा मिला। यह लार्वा कूलर में मिला है, जिस पर विभाग ने 5 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है।
- **लाल पैथ लैब–** कोलार स्थित लाल पैथ लैब में रखे थर्माकोल के डिब्बे में पानी भरा हुआ था, जिसमें डेंगू का लार्वा मिला, यहां 5 हजार रुपए का जुर्माना गया।
- **कम्फर्ट स्कूल–** सन खेड़ी स्थित कम्फर्ट स्कूल में गमले के पानी और छत पर पड़ी वेस्टर्न सीट में लार्वा मिला। जिस पर 5 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया।

अस्पतालों पर जुर्माना

डेंगू का लार्वा जहां भी मिल रहा है, लगातार जुर्माने की कार्रवाई कर रहे हैं। अभी तक कुल 1.06 लाख का जुर्माना लगाया है। इसमें मुख्य रूप से कई अस्पताल आदि शामिल हैं। खास तौर पर रुद्राक्ष अस्पताल, विनायक अस्पताल आदि शामिल हैं। महीने के अनुसार डेटा चेक किया है। पिछले इस साल डेंगू केस का प्रतिशत कम है। लोग आसपास कचरा इकट्?ठा नहीं होने दें। गमलों का पानी हर सप्ताह बदलें। जिससे की लार्वा नहीं पनप पाएं।

– अर्चना मिश्रा, डीएमओ भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर से सौजन्य मुलाकात की।

पुलिस आरक्षक भर्ती के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षण अब 18-19 व 20 नवम्बर को : मुख्यमंत्री

- बारिश के कारण युवाओं के हित में लिया गया निर्णय

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पुलिस आरक्षक भर्ती (जीडी) एवं (रेडियो) वर्ष 2023 के शारीरिक दक्षता परीक्षण (फिजिकल) 30 सितम्बर, 1 अक्टूबर और 2 अक्टूबर 2024 को होना निर्धारित किया गया था। पिछले कुछ दिनों से भारी बारिश के कारण हुई असुविधा को देखते हुए, इन तिथियों को आगे बढ़ाते हुए 18, 19 एवं 20 नवंबर करने का निर्णय लिया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के सभी युवाओं के हित में लिया यह निर्णय निश्चित ही पुलिस आरक्षक भर्ती के अभ्यर्थियों को तैयारी के लिए अतिरिक्त समय भी देगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया के माध्यम से यह संदेश देते हुए सभी अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं दी हैं।

एक करोड़ और नए सदस्य बनाएगी बीजेपी

दूसरे फेस के लिए टारगेट, अभी एक करोड़ मेंबर बनाकर देश में तीसरे स्थान पर एमपी

भोपाल (नप्र)। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा है कि बीजेपी के सदस्यता अभियान का दूसरा फेस एक अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक चलेगा और इस दौरान एक करोड़ और नए सदस्य बनाए जाएंगे। इस तरह बीजेपी अभियान के दौरान दो करोड़ सदस्य बनाएगी। शर्मा ने कहा कि आज हुई समीक्षा के दौरान अच्छा काम करने वाले और कमजोर परफार्मेंस वाले जिलों को लेकर चर्चा की गई है। अब तक एक करोड़ 5 लाख 34 हजार 180 लोग मिस कॉल के माध्यम से बीजेपी के मेंबर बने हैं। वहीं फार्म भर कर 97 लाख 92 हजार 981 लोगों ने बीजेपी ज्वाइन की है। इंदौर और मंदसौर ने बेहतर प्लानिंग के साथ अच्छा काम हुआ है। भोपाल में भी अच्छा काम हुआ है।

बीजेपी सदस्यता अभियान की प्रदेश की समीक्षा के बाद मीडिया से चर्चा करते हुए बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि जिस छिंदवाड़ा को चुनाव से पहले लोग जाने क्या-क्या कहते थे वह छिंदवाड़ा बीजेपी के सदस्यता अभियान में चौथे नम्बर का रिकार्ड बना रहा है। छिंदवाड़ा ने 78 प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया है जिससे अब साबित हुआ है कि पीएम नरेंद्र मोदी के गरीब कल्याण योजना के हितग्राहियों का गढ़ छिंदवाड़ा है।

इन विधानसभा सीटों पर 30 प्रतिशत ही काम

शर्मा ने कहा कि विधानसभा और लोकसभा चुनाव में जो विधानसभा बीजेपी के लिए कमजोर रही हैं, उन पर भी चर्चा हुई है। सैलाना, हरसूद, पंधाना जैसी कुछ विधानसभा में 30 प्रतिशत की ही प्रगति है। उस पर भी चर्चा हुई है।

30 साल तक के 64 प्रतिशत युवा जुड़े

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि अभियान में शिवपुरी, रीवा, मुरैना, धार का परफार्मेंस कमजोर है। रायसेन, सागर जिले अच्छा कर रहे हैं। सदस्यता अभियान में बड़ा संकेत यह मिला है कि 18 से 30 साल के 64 प्रतिशत युवाओं ने बीजेपी की सदस्यता ग्रहण की है। महिलाएं भी जुड़ी है। साथ ही 17782 थर्ड जेंडर्स ने भी सदस्यता ली है।

जहां 50 प्रतिशत से कम सदस्य वहां बैठकें करेंगे

उन्होंने कहा कि प्रदेश की समीक्षा के बाद अब जिन जिलों में टारगेट के आधार पर 50 प्रतिशत से अधिक मेंबर बने हैं वहां और जहां टारगेट का 50 प्रतिशत भी मेंबर नहीं बनें हैं, ऐसे जिलों की विधानसभा वार समीक्षा की जाएगी। इसके लिए प्लान तैयार है और सामूहिक बैठक के बाद ग्रुपवार बैठकें की जाएंगी।

जो विधानसभा अव्वल उनके नाम

प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष शर्मा ने बताया कि जिन विधानसभा क्षेत्रों में सदस्यता अभियान पर अच्छा काम हुआ है उसमें सबसे अव्वल इंदौर -1 विधानसभा है। इसके बाद इंदौर 2, भोपाल मध्य (90871), ग्वालियर, छिंदवाड़ा (91206), उज्जैन दक्षिण, सतना, गुना, सांवेर विधानसभा ने अच्छा काम किया है और कुछ ने तो टारगेट से अधिक सदस्य बनाए हैं।

20 जिलों में 50 प्रतिशत टारगेट पूरे नहीं

शर्मा ने कहा कि प्रदेश के 20 जिलों में लक्ष्य से 50 फीसदी से कम सदस्यता हो पाई है वहां के जिला अध्यक्षों के साथ बैठ कर समीक्षा करेंगे। साथ ही इसके लिए महिलाओं को अलग से फोकस करेंगे क्योंकि सभी महिलाओं के पास मोबाइल नहीं होता। ऐसी महिलाओं को फिजिकल फार्म देकर सदस्य बनाने का काम किया जाएगा।

प्रदेश की समीक्षा में यह बात भी सामने आई

- सदस्यता अभियान के अव्वल देश की टाप 20 असेंबली में छह मध्यप्रदेश की हैं।
- किसी पर एफआईआर है या उसकी अपराधिक प्रवृत्ति है तो ऐसे लोगों की सदस्यता जांच के बाद रिजेक्ट की जाएगी।
- वकीलों, खिलाड़ियों, डॉक्टर्स के साथ समाज के सभी वर्गों की अलग से मेंबरशिप कराई जाएगी।

कहानियों में स्त्रियों, पत्रकारिता में राजेंद्र माथुर और कविताओं में बच्चों पर चिंतन

भोपाल (नप्र)। साहित्य के विभिन्न रूप हमारी ज़िंदगी की पगडंडियां हैं। वे हमें धीरे धीरे जीने का रास्ता देती हैं। राहगीर से घुलने मिलने का ज़रिया ज़रिया बनाती हैं। शोररहित होकर साहित्य का सार हमारे अंदर मनुष्य होने का भरोसा पैदा करता है। ये पुस्तकें भरोसे के इस सृजन को सामने लाती हैं। यह बात 'त्रिविधा 3' में वरिष्ठ कथाकार शशांक ने बतौर अध्यक्ष कही।

मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन भोपाल इकाई के अध्यक्ष भवेश दिलशाद ने बताया कि रचनात्मक सिलसिले में तीन चुनिंदा किताबों पर चर्चा का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत उर्मिला शिरीष की 'प्रतिनिधि कहानियां', शेफाली शर्मा के काव्य संग्रह 'सॉरी आर्यभट्ट' और राजेश बादल कृत 'सदी का संपादक राजेंद्र माथुर' पर क्रमशः ख्यात कथाकार मनीष वैद्य, चर्चित कवि डॉ. आरती और वरिष्ठ साहित्यकार सुधीर सक्सेना ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन युवा लेखक सलीम सरमद ने किया और कार्यक्रम में तीनों किताबों के लेखक न केवल उपस्थित थे बल्कि उन्होंने भी किताब पर अपने विचार संक्षेप में रखे।

'10 प्रतिनिधि कहानियाँ' पर बोले मनीष वैद्य– हम जिस समय और समाज में रह रहे हैं, वहाँ तमाम दावों तथा ऊपर-ऊपर दिखते कुछ सतही बदलावों के बावजूद स्त्रियों की स्थिति बदतर ही कही जा सकती है। उर्मिला शिरीष जैसी वरिष्ठ कथाकार इन्हीं स्त्रियों के प्रति हमारे रवैये, उन पर पितृसत्तात्मक समाज के असर, उनकी विडंबनाओं, पीड़ाओं और उनके शाश्वत दुखों की पड़ताल लम्बे वक़्त से करती आ रही हैं। लेकिन उनकी कहानियाँ सिर्फ़ स्त्री की नहीं हैं, उनमें हमारे आसपास का पूरा समाज अपनी समग्रता में हमारे आज समय में नज़र आता है।

'सॉरी आर्यभट्ट सर' पर बोलीं आरती– शेफाली की कविताओं की केंद्रीय विषयवस्तु बच्चे हैं। घर-परिवार से शुरू होकर समाज, देश और दुनिया भर के बच्चे। जो कविताएं स्त्रियों के लिए हैं वहां भी बच्चे हैं। यहां तक कि जो कविताएं अपने वितान में राजनीतिक कविताएं लगती हैं या तत्कालिक घटनाक्रम के अनुभूति की कविताएं हैं, वहां भी बच्चे हैं। किसी कवि की संवेदना का इससे ज्यादा कोमल और विस्तृत रूप और क्या हो सकता है कि वह अपने लिए नहीं, अपनी पीढ़ी के लिए नहीं बल्कि आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए चिंतित है, परेशान है, उनके लिए रचनारत है।

'सदी का संपादक ' पर सुधीर सक्सेना– राजेश बदल द्वारा संपादित यह पुस्तक एक अमूल्य दस्तावेज है कि यह ना सिर्फ माथुर के व्यक्तित्व की परतों को उद्घाटित करती है बल्कि उनके उस कृतित्व को भी सामने लाती है जो उनके उत्कृष्ट संपादन कौशल और तटस्थ व निर्भीक अंतर्दृष्टि का भी परिचय देती है। किताब में संकलित 'कश्मीर ; एक मंत्र पाठ' इतिहास और पत्रकारिता के अध्येताओं के लिए बहुत मूल्यवान और संग्रहणीय संदर्भ है।

भोपाल में मासूमों के खिलाफ बड़ते अपराधों को लेकर प्रदर्शन

बच्चियों को लेकर पुलिस कमिश्नर कार्यालय घेरने पहुंचे कांग्रेसी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में लगातार मासूम बच्चियों के साथ दुराचार की घटनाएं सामने आने के बाद कांग्रेस ने पुलिस कमिश्नर कार्यालय का घेराव किया। कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला के नेतृत्व में यह प्रदर्शन किया गया। इस दौरान पुलिस कंट्रोलरूम में

जमकर नारेबाजी की गई। प्रदर्शन में कई मासूम बच्चों के साथ उनके पेरेंट्स शामिल हुए। कांग्रेसियों ने पुलिस कमिश्नर को बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और बाल अपराधों में लिप्त आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

'कमिश्नर अंकल हमें बचाओ'

प्रदर्शन के दौरान बच्चियों के हाथ में 'कमिश्नर अंकल हमें बचाओ' लिखी हुई तख्तियां थीं। कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने कहा की भोपाल में बच्चियां अपने घर, स्कूल, बाजार कहीं पर भी सुरक्षित नहीं हैं, लगातार उनके साथ अप्रिय घंटनाएं बढ़ने लगी हैं, उन्होंने कहा कि सरकार और पुलिस अपराधियों को रोकने में विफल हो चुकी है।

मंदसौर में गांधीसागर डैम के 3 गेट खुले

विदिशा में युवक नदी में बहा; शिवपुरी, गुना-निवाड़ी में तेज बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में शुक्रवार शाम से बारिश का दौर जारी है। मंदसौर में गांधीसागर डैम फुल वाटर लेवल हो चुका है। शनिवार सुबह से डैम के तीन गेट खोलकर पानी छोड़ा जा रहा है। बांध के कैचमेंट एरिया में 94500 क्यूसेक पानी की आवक हो रही है। जिसके कारण बांध का जलस्तर 1311.18 फीट पर पहुंच गया है। भोपाल में देर रात तक बारिश हो रही थी।

विदिशा जिले के ग्यारसपुर में शुक्रवार रात नदी के तेज बहाव में तीन युवक बह गए। इनमें से दो को बचा लिया गया जबकि एक लापता है। तीनों युवक पिकअप वाहन से कस्बा बागरोद से दूध लेकर बर्री धमनोदा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान नदी के रपटे पर पानी के तेज बहाव में गाड़ी फंस गई। युवक गाड़ी से उतरकर रपटा पार करने की कोशिश कर रहे थे। ग्रामीणों ने रस्सी की मदद से दो युवकों को बचा लिया जबकि 21 वर्षीय लालू कुशवाहा बह गया। एसडीईआरएफ की टीम उसे तलाश रही है। ग्यारसपुर तहसीलदार सौरव मालवीय, नायब तहसीलदार राजेंद्र सेन और हैदरगढ़ थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह भी मौके पर हैं। आगर मालवा में तेज बारिश से खेतों में पानी भर गया है। जिले के सुसनेर में घरों में पानी घुसने लगा है।मौसम विभाग के अनुसार, शिवपुरी, गुना और निवाड़ी में अगले 24 घंटे में तेज बारिश का अलर्ट है। वहीं, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर में बूंदाबांदी के आसार हैं। भोपाल में सुबह से धूप खिली है।

एमपी के 23 जिलों में बारिश हुई

प्रदेश में शुक्रवार को भी बारिश का दौर जारी था। 23 जिलों में पानी गिरा। भोपाल में दोपहर बाद मौसम बदला और तेज बारिश होने लगी। खजुराहो-टीकमगढ़ में 1 इंच पानी गिर गया। वहीं, नर्मदापुरम में पौन इंच बारिश हो गई।

टीकमगढ़, मंदसौर, नर्मदापुरम, गुना, छिंदवाड़ा, मंडला, नौगांव, रीवा, सागर, सिवनी, सीधी, उमरिया, मलाजखंड, बैतूल, धार, गुना, ग्वालियर, इंदौर, खंडवा, पचमढ़ी में भी पानी गिरा। बारिश होने की वजह से मंदसौर की मंडी में रखी सोयाबीन की फसल भीग गई।

जिस मल्टी में मासूम की रेप-हत्या, वहां लगेंगे 30 सीसीटीवी

- डीसीपी बोले– बाहरी लोगों का वैरिफिकेशन कराया जाएगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहजहांनाबाद इलाके स्थित जिस मल्टी क्षेत्र में मासूम के साथ ज्यादती और हत्या की गई थी, पुलिस जन सहयोग से वहां 30 सीसीटीवी लगाने जा रही है। सभी अहम पॉइंट देख लिए गए हैं। जल्द यहां सीसीटीवी लगाने का काम शुरू किया जाएगा। बड़ी आबादी वाले इस इलाके में अभी महज दो स्थानों पर कैमरे लगे हैं। एक पुलिस की चौकी पर और दूसरा धार्मिक स्थल पर।

अधिकांश लोग रह रहे किराए से– डीसीपी रियाज इकबाल ने बताया कि मल्टियों में जिन लोगों को फ्लैट अलॉट हुए हैं, अधिकांश लोग वहां नहीं रह रहे हैं। इन फ्लैटों को किराए पर चलाया जा रहा है। जिसमें बड़ी संख्या में बाहरी लोग रह रहे हैं। अब पुलिस वेरिफिकेशन कर यह पता लगाएगी कि फ्लैट किसे अलॉट है और इसमें कौन रह रहा है।

सरकारी योजना के तहत किराए पर फ्लैट चलाने वाले मालिकों का आवंटन निरस्त करने पुलिस प्रशासन को पत्र भी लिखेगी।

मासूम से ज्यादती के बाद हत्या का आरोपी अतुल भालसे को शुक्रवार दोपहर पुलिस ने कोर्ट में पेश किया। गिरफ्तारी से पहले पुलिस से भागने की कोशिश में आरोपी गिर गया था। उसके एक पांव में गंभीर चोट लगी है। पुलिस ने आरोपी के फ्लैट की एक बार फिर सर्चिंग की है। जहां से घटना के समय उसके द्वारा पहना हुआ लोअर सहित अंडर गारमेंट्स और एक शर्ट जब्त की गई है। अन्य सामान की जब्ती के लिए पुलिस एक बार फिर उसके फ्लैट में सर्चिंग करेगी। आरोपी की मां बसंती और बहन चंचल को जेल भेज दिया गया है। घटना के बाद आरोपी किन-किन लोगों के संपर्क में था। क्या घटना की जानकारी उसने किसी अन्य को भी दी थी, इस संबंध में भी उससे पूछताछ की जाएगी। पुलिस घटना का रीक्रिएशन भी करेगी।

कहानी का पाठ

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

ठाकुर का कुआं समाज की असहनीय पीड़ा का बयान

प्रेमचंद की कहानी सामाजिक दंश, यथार्थ और पीड़ा के बीच जीवन जी रहे बंचित समाज की उस स्थिति से साक्षात्कार कराता है जो बहुत गहराई के साथ मनुष्य के द्वारा मनुष्य के पद से गिरते जाने की गाथा है, जो कुछ मनुष्यता के लिए अशोभनीय है वह जब समाज का सच बनकर सामने आता है तो कई बार लगता है कि हम किस समाज में रह रहे हैं क्या यहीं मनुष्यता है ? क्या एक मनुष्य के रहते दूसरा मनुष्य पानी नहीं पी सकता ? फिर हम किस समाज में रह रहे हैं ? तमाम प्रश्नों पर विचार करते हुए कहानी यथार्थ के कठोर धरातल पर पटक देती है कि देखों यह सच है इससे मुंह मोड़ने की जरूरत नहीं है । ठाकुर का कुआं , सामाजिक विडंबना, जातीय दंश और पीड़ा के उस सच की कहानी है जो मनुष्य को मनुष्य के आधार पर न देख उसको जातीय आधार पर देखती है ऐसे में जोखू को पीने का पानी भी नसीब नहीं हो पाता आखिर ऐसे हालात क्यों हो जाते हैं कि समाज का बहुत बड़ा वर्ग हर तरह की सुविधाओं से बंचित है । वह कुएं से भरकर पानी भी नहीं पी सकता , जोखू और गंगी की दशा के लिए सब जिम्मेदार हैं यह किसी एक की जिम्मेदारी नहीं है । हम सबको सामाजिक समरसता के लिए काम करने की जरूरत है न कि केवल आदर्श की बातें । भारतीय ग्रामीण समाज को प्रेमचंद के यहां बहुत गहराई के साथ उठाया गया है । उनके यहां कहानी के सच को अभिव्यक्त करने के लिए उन जीवन स्थितियों में ले जाते है जहां पर वास्तविक समाज रहता है व किस तरह से व्यवहार करता है और समाज में जिस तरह से सामाजिक श्रेणीक्रम है उसमें आदमी कैसे अपने अधिकारों के लिए डट कर मुकाबला करें इन सब बातों के लिए उनकी कहानी हमें तैयार करती है ।

प्रेमचंद सामाजिक यथार्थ के साथ भारतीय ग्रामीण समाज के सच को इस तरह सामने लाते हैं कि जैसे हर घटना आंखों के आगे हो रही हो... प्रेमचंद का लेखक एक एक सच पर टार्च की रोशनी डालता चलता है कि यह है , इस हालात में लोग कैसे रह रहे हैं और हमारे समाज में जहां आदर्श की बहुत सारी कहानियां हैं वहां वास्तव में समाज के गरीब और बंचित वर्ग के पास जीवन जीने की क्या सुविधाएं हैं । वे कैसे गुजर बसर कर रहे हैं...इस हालात और सच को जानने के लिए ही प्रेमचंद को पढ़ना आवश्यक हो जाता है उनको पढ़ते पढ़ते हम सामाजिक यथार्थ के पन्ने को पलटना शुरू करते हैं और इस तरह की कहानियां ही समाज में परिवर्तन लाने के लिए मनुष्य मन को सही दिशा में चलाने के लिए हस्तक्षेप करने को कहती हैं । यहां मनुष्य के रूप में कोई बड़ी मांग नहीं है, कोई बड़ी इच्छा नहीं है । जोखू को प्यास लगी है और पत्नी गंगी से पानी मांग रहा है । प्यास ही तो बुझाना है और वह भी नहीं मिल पाता । यह कैसी विडम्बना है कि जोखू को एक लोटा पानी नहीं मिल पाता । ऐसे में कैसे लोग रह पायेंगे कैसे जीवन बचेगा जब पानी भी नहीं मिल सकता तो फिर आदमी कहां जायेगा । जोखू बीमार है और पास में जो पानी बचा है वह पीने लायक नहीं है, बदबू आ रही है ऐसे में वह क्या करें पर यह पानी भी आसानी से नसीब नहीं होता इसके लिए भी गरीब आदमी को पता नहीं क्या क्या सुनना पड़ता है । हमारे समाज में जो जातीय दंश है वह जीवन की सहज स्थितियों को भी असहनीय पीड़ा का रूप दे देता है जिसे ठाकुर का कुआं जैसी कहानियां बहुत खुल कर सामने रखती हैं । सामाजिक स्थितियां कितनी भयानक होती है , सामाजिक भय कितना होता है कि भरा हुआ घड़ा छोड़कर गंगी तेजी से घर की ओर भागती है और घर पहुंच कर देखती है कि मजबूर जोखू बदबूदार पानी पी रहा है । हालात इतने बदतर हैं कि कथाएं मनुष्य को अंदर से बाहर तक हिला कर रख देती हैं कि यदि इस तरह जीवन स्थितियां हैं तो जीवन का क्या होगा ? आप देखें कि जोखू जो गांव का एक गरीब आदमी है घर में कोई और नहीं है , बस पत्नी गंगी है । जोखू बीमार है । दवा भी नहीं है, साफ पानी भी नहीं है । प्यास लगी है । पत्नी से कहता है कि एक लोटा पानी ला दें, यह जो पानी रखा है इसमें बदबू आ रही है पीया नहीं जाता । पत्नी भी देखती है नाक लगा कर सूघती है तो पानी बदबू मार रहा है । सच में कैसे पानी पीते । पर रात हो गई है कहां से लाएं पानी । गांव में दो ही कुआं है । एक ठाकुर का और दूसरा साहू का जो गांव के दूसरे छोर पर बहुत दूर है । वह भी कहां पानी भरने देता । और ठाकुर के कुएं पर गंगी कैसे पानी भरे यदि कोई देख लिया तो खैर नहीं। पर भूखा-प्यासा क्या नहीं करता । गंगी रात्रि के 9 बजे के करीब ठाकुर के कुएं पर चली गई कि अब वहां कोई नहीं होगा तो बीमार पति के लिए एक घड़ा पानी भर लेंगे । पर वहां भी ठाकुर के साथ पांच से दस लोग बैठे थे, बातें कर रहे थे। इधर उधर की दुनिया भर की बातें पर गंगी क्या करें कैसे पानी भरे । यह सोचते हुए गंगी कुएं की जगत के नीचे छुप कर बैठी रही कि ये लोग चलें जाएं तो पानी लायेगी । इस बीच दो घरों की औरतें पानी भर कर लें भी गई पर गंगी नहीं भर सकती थी। क्योंकि उसकी जाति आड़े आ जाती है । सब चलें जाते हैं और ठाकुर भी सोने चलें जाते हैं । दरवाजा बंद हो जाता है तब जल्दी जल्दी गंगी कुएं से पानी भरती है । सारी ताकत लगाकर पानी उपर खींच ही लेती है कि ठाकुर का दरवाजा खुल जाता है और गंगी सब छोड़कर तेजी से घर की ओर भागती है । वह पति के लिए पानी नहीं ले पाती और अंत में जब घर पहुंचती है तो देखती है कि वही बदबूदार पानी जोखू पी रहा है । आखिर क्यों गरीब और बंचित समाज के आदमी को भरपेट खाना तो छोड़िए पानी भी नसीब नहीं होता, इस सच को आंखों में आंख डालकर कहने की हिम्मत प्रेमचंद के कथाकार में थी जो बराबर से सामाजिक श्रेणीक्रम में तथाकथित उच्च कहलाने वाली जातियों के विधान को मनुष्यता के लिए अनावश्यक समझते हुए जीवन की व्याख्या करते हैं और वहां से कहानी उठाते हैं जो हमें झकझोर दे स्थितियों में बदलाव लाने के लिए मजबूर करें। यह किसी एक जोखू और एक गंगी की कहानी भर नहीं है बल्कि गांव के गांव इस विडंबना के शिकार रहे हैं और यह जातीय दंश पीड़ा समाज ने भुगता है । इस विडंबना की ओर प्रेमचंद ने न केवल संकेत किया है बल्कि ग्रामीण यथार्थ को प्रकट करते हुए जमीनी हकीकत को सामने लाने का काम किया है ।

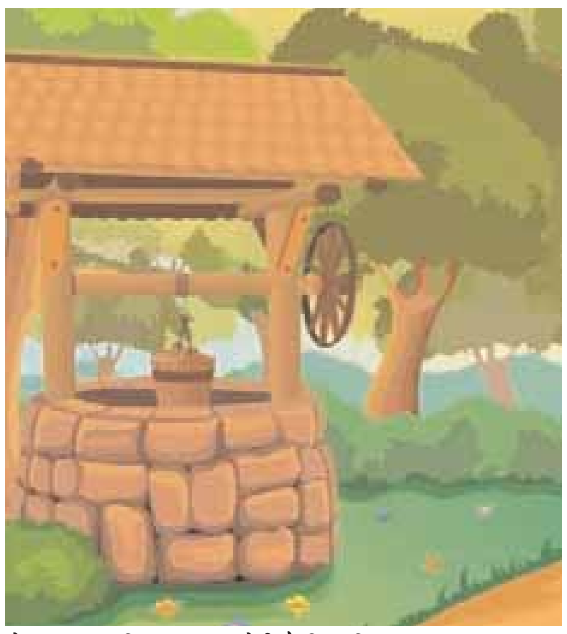

प्रेमचंद की कहानियां सामाजिक हस्तक्षेप करती हैं जिसमें समाज के उस सच को दिखाया गया है जो हमारे समाज में विडंबना की तरह व्याप्त है जिसमें गरीब और बंचित समाज के आदमी को न तो सुख नसीब है न ही मानवीय गरिमा के साथ रहने की छुट । ठाकुर का कुआं इसी सच को व्यक्त करता है कि जोखू जो बीमार है जिसे पानी पीना है और घर में पानी नहीं है । गांव में दो ही कुएं है एक साहू का और दूसरा ठाकुर का पर जोखु तो दलित समाज का है उसे इन कुएं पर जाने की इजाज़त नहीं है । जोखू बीमार है । पानी भला कैसे मिलेगा । जोखू के लिए पानी नहीं है फिर गांव में कुएं हैं या नहीं हैं इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता । कहानी की स्थितियां बताती हैं कि हम चाहे जितना आदर्श की बातें कर लें पर समाज की दशा क्या है और इस दिशा में कैसे परिवर्तन होगा इसकी ओर यह कहानी संकेत करती है । यह सब संभव तब होगा जब हमारे भीतर मानवीय मूल्य हों और हम वास्तव में उसे मानते हों तभी कोई जोखू बदबू दार पानी पीने के लिए मजबूर नहीं होगा न ही कोई गंगी इस तरह कुएं पर पानी का घड़ा छोड़कर भागेगी और न ही ठाकुर का दरवाजा खुलते ही डर का माहौल होगा । यदि यह सब हो जाता है तो कहानी सही दिशा में मानव समाज को ले जाने की कोशिश करती है । कहानी सामाजिक पीड़ा को व्यक्त करती है जिसे यह समाज कदम कदम पर सहता है । जब तक हमारी सोच में , संवेदना में बदलाव नहीं आयेगा तब कुछ भी संभव नहीं है ।

कविता

मृदु मंद्र समीर

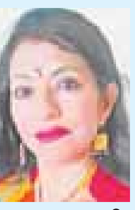

अनुपमा अनुश्री

पाँखी परों में फड़फड़ाती हैं
गेहूँ बालियों में खनकती हैं
बाँस में वेणु सी बज उठती हैं
पग में नूपुरनाद बन झनकती हैं।

साँसों में प्राणवायु बन
आरोह -अवरोह, उच्छवास
चैतन्यता का आकाश रचाती हैं।
लयकारी से साँसों का
मधुरम संगीत बन जाती हैं
मलय समीर बन मनोभूमि
मृदु मंद्र सुगंध से महकाती हैं।

बयार की ये रुबाई
जिस दिल में जैसे समाई
छेड़ कर बंसी उसने
अपनी एक धुन बजाई
आहत स्वर गूँजा
कि अनाहत की मस्ती
रुह में झनझनाई ।

कविता

श्राद्ध

अविनाश अग्निहोत्री

मां हम इन दिनों में दादी का श्राद्ध गलत विधि से करते है। मालकिन के यहां से परोसे में मिले स्वादिष्ट पकवान खाते हुए ननकु बोला। ऐसा क्यों? मां ने उसकी बात सुन प्रतिप्रश्न किया। पंडितजी के पूजा पाठ करवाने के बाद वहां परिवार के सभी लोगो ने मालकिन की सास के फोटो के सामने क्षमा याचना की। अब हम तो कभी ऐसा करते ही नही,ननकू ने मासूमियत से पूछा। अरे मालकिन की बीमार सास का पूरा बुढ़ापा अपने बहु बेटे से दूर, पुराने घर पर अकेले ही कटा और हमारी माई तो सारा जीवन हमारे साथ ही रही। अंत समय हमने माई की खूब सेवा करके उसे खुश और संतुष्ट रखा। इसलिये अब हमे उससे क्षमा मांगने की कोई जरूरत नही।तब मां ने ननकु को समझाते हुए कहा।

पुस्तक समीक्षा

प्रकाश कान्त

'साहब का बसंत': सरोकारों के व्यंग्य !

दिइधर के सालों में व्यंग्य का काफ़ी विस्तार हुआ है। जो कभी कविता तक सीमित हुआ करता था (वह भी सिर्फ़ एक प्रवृत्ति!) उसका अब स्वतंत्र विकास हो चुका है। उपन्यास, कहानी, नाटक जैसी कई विधाओं में अब वह एक स्वतंत्र विधा के रूप में दिखाई देता है। लेख के रूप में तो वह स्वतंत्र विधा है ही!

'साहब का बसंत' गोविन्द सेन का दूसरा व्यंग्य संग्रह है। विधा के रूप में बहुप्रचलित व्यंग्य लेख! सामान्य आकार-प्रकार के! अनावश्यक विस्तार उनमें नहीं है। ये सारे आसपास की विडम्बनाओं, विकृतियों, पाखंड इत्यादि से निकले हैं। जैसा कि संग्रह की भूमिका में कहा भी गया है। व्यंग्य विधा अपने-आपमें सरोकारों के प्रति सर्वाधिक सक्रिय विधा है। वैसे तो समूचा सृजन ही मनुष्य और मनुष्यता के पक्ष में खड़ा हुआ करता है। व्यंग्य इसमें सबसे अगली पंक्ति में रहा है। बिना किसी लिहाज़ और दायें-बाएं होने के!

बहरहाल, संग्रह के लेखों में हमारा परिचित- अतिपरिचित संसार है। इस संसार में वह सब है जिसे एक सामान्य जन अपने दैनिक जीवन में ढोता, भुगतता और जिसका सामना करता है। सार्वजनिक जीवन में व्याप्त सड़ांध और गंदगी! एक व्यंग्यकार भले ही कोई समाजसुधारक न होता हो लेकिन छोटाङ्कमोटा पहरेदार तो होता ही है। शासकीय धन की लूट, अतिक्रमण, प्रशासन तन्त्र की लापरवाही, शिक्षाक्षेत्र की विकृतियाँ, साहित्य क्षेत्र की रुग्ण महत्त्वाकांक्षाएँ इसी तरह की तमाम

चीज़ों पर यहाँ व्यंग्य है। साथ ही, व्यक्ति पर भी हैं और प्रवृत्तियों पर भी! गोविन्द सेन की व्यंग्य दृष्टि-निजी एवं सार्वजनिक जीवन की अनेक छोटी-बड़ी विसंगतियों पर जाती है। इसमें विशेष बात यह कि इस काम में वे किसी दूरबीन या खुर्दबीन का इस्तेमाल नहीं करते! बल्कि एक आम आदमी की अपने रोज़ के जीवन में इन सारी चीज़ों को लेकर जिस तरह की तीखी प्रतिक्रिया होती है और कई बार वह व्यंग्यात्मक भी होती है, वही कुछ इन व्यंग्यों मं देखा जा सकता है। इसके चलते गोविन्द सेन उसी आदमी के साथ खड़े मिलते हैं। उनकी अलग से उपस्थिति दिखाई नहीं देती। सुदूर इलाकों में भगवान-भरोसे यात्रा करवानेवाली बसें, दिवंगतों को श्रध्दांजलि देने का पाखंड करनेवाले कथित आदरणीय, ज़ोर का झटका धीरे से देनेवाले परिचित, साम्प्रदायिक वैमनस्य पैदा करवानेवाले इत्यादि जैसे कई तरह के लोगों को इन लेखों में देखा जा सकता है। इनके आलावा, सम्मान के झमेले, पुस्तकों के लोकार्पण/नेतार्पण के तमाशे, कवि सम्मेलनों की सेटिंग, कम्प्यूटरों के सिरदर्द जैसी चीज़ों को भी! व्यंग्य को रोगी को दी जानेवाली 'कड़वी गोली' कहा जाता है। गोविन्द सेन भी अपने व्यंग्य लेखन को ऐसा ही कुछ मानते हैं।

किताब - साहब का बंसत (व्यंग्य संग्रह)

लेखक - गोविन्द सेन

प्रकाशक - न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली-12

मूल्य - 225 रुपये

प्रभु ! कुछ कीजिए

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

मंगतराम मंदिर पहुँचा। उसने दीपक प्रज्वलित किया, दो अगरबत्ती जलाई, ग्यारह रुपए का प्रसाद और श्रीफल चढ़ाया, हाथ जोड़े, आँख बंद की और नत मस्तक होकर आर्त्त स्वर में निवेदन किया-'प्रभु! 'प्लीज... प्लीज़... कुछ कीजिए...!'

प्रभु ने अपनी बंद पलकों को खोला। मंगतराम पर ऊपर से नीचे तक दृष्टिपात किया और अपनी मनमोहनी मुस्कान बिखेरते हुए बोले- 'भक्त बहुत परेशान लग रहे हो। लगता है कि कोई बहुत बड़ी विपदा आन पड़ी है। देख रहा हूँ कि आजकल तुम रोजाना मंदिर आते हो और घंटों मेरी ड्योढ़ी पर बैठकर मेरा नाम जपते रहते हो। और बीच-बीच में प्रभु बचाओज प्रभु! बचाओ का रट्टा मारते रहते हो। अब कुछ बताओगे भी या यूँ ही प्रभु... प्रभु... की रट लगाए रहोगे...!'

मंगतराम- 'प्रभु! वो बात ऐसी है कि लोगों के बीच परस्पर सौहार्द्र और भाईचारा ख़त्म होता जा रहा है। विश्वास का जनाजा उठा जा रहा है। सियासतदानों में ईमानदारी नाम मात्र को रह गई है। इबादत, पूजा-पाठ, प्रार्थनाओं में आडंबर और दिखावे ने घर कर लिया है। मंदिर-मस्जिद एक-दूसरे के खिलाफ सीना ताने, खंभ ठोककर खड़े हैं। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों के प्रति असहिष्णु होते जा रहे हैं। दुश्मन की तरह खून के प्यासे हुए जा रहे हैं। प्रभु! घोर कलियुग आ गया है। चारों दिशाओं में त्राहिमाम मचा हुआ है।'

प्रभु ने मंगतराम की आँखों में झाँका और ढाढस बँधाते बोले- 'देखो मंगतराम बात ऐसी है कि यह जो कुछ भी देश और दुनिया में उलटा-पुलटा घटित होता हुआ तुम देख-सुन रहे हो। इस सबकी वजह सिर्फ़ और सिर्फ तुम और तुम्हारी यह आदमजात है। ये मारामारी, ये खूनखराबा सब कुछ तो तुम लोगों का किया-धरा है। अतः तुम्हें ही आपस में मिल-बैठकर समझदारी और आपसी रज़ामंदी से खुद के द्वारा पैदा की गई मुसीबतों का हल खोजना होगा। हाँ! अगर कभी मेरी पूजा-पाठ, नाम जाप से फ़ुरसत मिले, तो मेरी द्वारा अर्जुन को सुनाई गई 'गीता' को एक बार अवश्य पढ़ लेना। कदाचित तुम्हें और तुम्हारी इस दुनिया को मुसीबत से बचने का कोई रास्ता दिखाई पड़ जाए।' प्रभु ने इतना कहा और भूत की तरह अंतर्ध्यान हो गए...!

ऋतु गीत

कमलेश कुमार दीवान

कैसे कौन कहे

कड़े दिनों की मीठी बातें
कैसे कौन कहे?
इस उस किस किससे मुलाकातें
कैसे कौन कहे?
दिन तपते हैं दुपहर भारी
शाम सुनहरी रातें कारी
उमस भरी सांसे लगती है
बादर और वर्षा बाजारी
यहां अधिक जल और
वहां कहीं पर बूंदाबांदी
मन भाए ललचाए ऐसे
एक बड़ी सौगात लगती हैं
दिन बीते रूठी सी रातें
कौन बताए कैसे मौन सहे
कैसे कौन कहे?
मौसम की क्या बात कहें हम
कुछ ठंडा कुछ ताप सहे हम
पावस गई शरद आई है
किस ऋतु की क्या माप कहें हम
बदला समय बिताना मुश्किल
कैसे कौन सहे?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

अनकहा दर्द

दिवाली का त्योहार था, और शहर भर में रौशनी का आलम था। पटाखों की आवाज़ें, मिठाइयों की खुशबू, और घर-घर में दीप जल रहे थे। लेकिन हमारे मोहल्ले में कुछ अलग ही मंजर था। मोहल्ले के चौराहे पर एक विशाल पंडाल सजाया गया था, जिसमें हर तरफ दीयों की जगमगाहट थी। सब लोग उत्साह में थे, लेकिन मैं जानता था कि इस उत्सव में भी कुछ न कुछ तो गड़बड़ है।

'अरे भाई, ये तो दिवाली का मजा ही खराब कर दिया!' मैंने अपने दोस्त बबलू से कहा, जो हमेशा की तरह अपने नए कपड़ों में चमक रहा था। बबलू हंसते हुए बोला, 'क्या करूँ यार, ये तो हमारी मोहल्ले की परंपरा है। सब कुछ ठीक नहीं है तो क्या हुआ, कम से कम हम दिखावे के लिए ही सही, दिवाली मनाने आए हैं।'

इसी बीच, पंडाल में आयोजक भाई लोग आ गए। उनके चेहरे पर टेंशन साफ दिखाई दे रही थी। 'क्या बात है भैया, सब ठीक तो है?' मैंने पूछा। एक आयोजक ने कहा, 'भाई, बस थोड़ा सा बजट कम है। मिठाई का खर्चा बढ़ गया है, लेकिन हम तो कोशिश कर रहे हैं कि दिवाली का माहौल बना रहे।'

क्या बात कर रहे हो! दिवाली के लिए तो हमें अमीर बनने की जरूरत नहीं है, बस थोड़ी ईमानदारी से काम कर लो! मैंने चुटकी लेते हुए कहा। उन्होंने मेरी बात पर हंसते हुए कहा, ईमानदारी? अरे भाई, ये तो सिर्फ किताबों में होती है। यहाँ तो सब दिखावे का खेल है। समझा?

फिर मैंने देखा कि मोहल्ले की महिलाएं भीड़ में इकट्ठी थीं, वो सभी अपने-अपने तरीके से दिवाली की तैयारी कर रही थीं। एक महिला ने कहा, इस बार तो हम सब एक साथ मिलकर दीप जलाएँगे। दूसरी ने कहा, अरे नहीं, हमारे घर का दीप सबसे बड़ा होना चाहिए। बस वही सबसे सुंदर दिखेगा! तभी मैंने देखा कि वहाँ पर एक आदमी जो ढेर सारी मिठाइयाँ लेकर आया था, वो सबके बीच में खड़ा होकर बोल रहा था, भाई लोग, इस बार की मिठाई सबसे खास है! एक तो ये इंपोर्टेड है, और ऊपर से 20 प्रतिशत ज्यादा मीठी! सभी ने एक साथ कहा, बस ठीक है, बस अच्छी लगे तो चुप रहो।

इसी बीच एक और मित्र, फट्टू, जो हमेशा कुछ न कुछ नया करने की कोशिश करता है, वो भी वहाँ आ गया। भाई, मैंने इस बार एक नया पटाखा लाया है। इसका नाम है 'आतिशबाज़ी-ए-इनोवेशन'! उसने सबको बताया। मैंने कहा, यार, ये तो सिर्फ एक नया नाम है। तुम भी क्या करोगे?

बबलू ने हंसते हुए कहा, भाई, ये सब तो यहीं हो रहा है। सबकी अपनी-अपनी दुकानें सज गई हैं। जैसे ही दिवाली आएगी, सब चाँद बन जाएंगे।

फट्टू ने कहा, अरे, पर तुम्हें पता है, इस बार हम सोशल मीडिया पर भी ट्रेंड करेंगे। हमारी दिवाली का नाम टॉपिक बनेगा। मैंने सोचा, अच्छा! देखो भाई, अब तो दिवाली का मतलब सिर्फ लाइक्स और शेयर बन गया है। भगवान से भी ज्यादा फेमस होना चाहिए!

तभी पंडाल में एक बड़े नेता आ गए, और सब लोग ताली बजाने लगे। उनका चेहरा देखकर मुझे एक अजीब सी हंसी आ गई। भाई, ये क्या हो रहा है? क्या ये भी दिवाली का हिस्सा है? मैंने पूछा। आयोजक ने कहा, ये तो महोत्सव का चेहरा हैं, भाई। इनका आना जरूरी है, वरना हमारी दिवाली अधूरी रह जाएगी।

नेता ने पंडाल में आते ही सबको भाषण देना शुरू कर दिया, भाइयों और बहनों, इस दिवाली हम सब मिलकर एक नई शुरुआत करेंगे। मैं सोचने लगा, अच्छा! क्या नई शुरुआत? क्या मिठाई में और चीनी मिलाने की बात कर रहे हो?

तभी पंडाल में आग लगी हुई गाड़ी की आवाज आई। सब लोग घबरा गए। लोग इधर-उधर भागने लगे। मैंने सोचा, वाह भाई, ये तो दिवाली का नया रूप है–पटाखों के साथ आग लगाना। आग से निपटने का कोई इंतजाम नहीं था, पर सब लोग अपनी-अपनी रोटी सेंकने में लगे हुए थे।

अचानक, एक बच्चा चिल्लाया, मम्मी, ये क्या हो रहा है? उसकी माँ ने कहा, चुप रहो, यह तो बस दिवाली की मस्ती है! मैंने सोचा, क्या मजा है! जब आग लगी हो, तब भी दिवाली की मस्ती! इसे कहते हैं अपने रंग में रंग जाना!

बबलू ने कहा, चल यार, हम भी कुछ कर लेते हैं। दीप जलाते हैं! लेकिन तभी सभी के बीच एक महिला रोने लगी, मेरे घर की सारी मिठाई जल गई! उसके आंसू देखकर मैं भी पिघल गया। सबकी आँखों में आंसू थे, सबकी दिवाली उजड़ गई। मैंने सोचा, ये तो दिवाली का असली रूप है–रौशनी के पीछे छुपा अंधेरा।

फिर मैंने देखा कि नेता महोदय अपनी सुरक्षा के घेरे में थे, जबकि बाकी सब लोग आग में झुलस रहे थे। मैंने अपने आप से कहा, क्या यही है हमारे त्योहारों का असली मतलब? हर साल दिवाली के नाम पर सिर्फ दिखावा और धुआं?

जैसे ही मैंने दिवाली के दिन की सारी बुराइयों को अपने दिल में बसा लिया, मेरे आँखों से आंसू बहने लगे। और उस पल मैंने सोच लिया, कि इस दिवाली का असली मजा क्या है? सब दिखावा है, और असली खुशी कहीं खो गई है। मैंने फिर से अपने चारों ओर देखा, हर चेहरे पर वही दर्द, वही आंसू। क्या यही दिवाली है?

और इसी सवाल के साथ, सबकी आँखों में वही एक अकेला सा दर्द था, जो न कह पाते हुए भी सबको जोड़ रहा था।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

रॉकॉको शैली से नवशास्त्रीयतावाद: सफर कला का

जीवन चक्र वृत्तीय सफर तय करता है इसमें कोई दो राय नहीं है हां उसके बीच लगने वाला समय दीर्घ या अल्पकालिक जरूर हो सकता है। आधुनिक कला में हो रहे परिवर्तनों को दर्शक आसानी से नहीं पचा पा रहे थे बल्कि आधुनिक कला को भी कई परिक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ रहा था। दर्शक विशेषत: विरोधियों का एक समूह तो इसे नवजात, अबोध समझ कर इस पर ध्यान ही नहीं दे रहा था जबकि दूसरा कला के नाम पर इसे धब्बा, बकवास, पाखंड, दिखावा या और भी पता नहीं क्या-क्या समझ रहा था और खुलकर विरोध भी कर रहा था जबकि वहीं एक तीसरा समूह भी था जो संख्या में तो कम था पर कला में हो रहे परिवर्तनों का पक्षधर था और कुछ नये की उम्मीद में था, वह इसको आगे बढ़ते हुए देखना चाहता था और ऐसा हुआ भी। हालांकि आज तक की यात्रा की बात अगर करी जाय तो मामला फिर वहीं आकर रुकता है जहां से शुरुआत हुई थी। आधुनिकता के नाम पर आज तो गजब की विचारधारा दिख जाती है कहीं-कहीं खैर हम बात अभी आधुनिक कला के शुरुआती दिनों की कर रहे हैं इसलिए अभी वहीं ठहरते हुए बात करते हैं।

कला शुरुआती दौर में धार्मिक, सामाजिक एवं सामूहिक अवधारणाओं के बीच होकर आगे बढ़ती हुई प्रतीत होती है। कलाकार हमेशा कुछ नया करने की सोचता है अलग बात है कि इस खोज में कई बार उसे पुनः वहीं पंहुच जाना होता है जहां से वो चला होता है पर इसी खोज में कभी ऐसे जगह भी पहुंच जाना होता है जो मिशाल बन जाता है लोगों हेतु। जीवन चक्र वृत्तीय सफर तय करता है इसमें कोई दो राय नहीं है हां उसके बीच लगने वाला समय दीर्घ या अल्पकालिक जरूर हो सकता है। आधुनिक कला में हो रहे परिवर्तनों को दर्शक आसानी से नहीं पचा पा रहे थे बल्कि आधुनिक कला को भी कई परिक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ रहा था। दर्शक विशेषतः विरोधियों का एक समूह तो इसे नवजात, अबोध समझ कर इस पर ध्यान ही नहीं दे रहा था जबकि दूसरा कला के नाम पर इसे धब्बा, बकवास, पाखंड, दिखावा या और भी पता नहीं क्या-क्या समझ रहा था और खुलकर विरोध भी कर रहा था जबकि वहीं एक तीसरा समूह भी था जो संख्या में तो कम था पर कला में हो रहे परिवर्तनों का पक्षधर था और कुछ नये की उम्मीद में था, वह इसको आगे बढ़ते हुए देखना चाहता था और ऐसा हुआ भी। हालांकि आज तक की यात्रा की बात अगर करी जाय तो मामला फिर वहीं आकर रुकता है जहां से शुरुआत हुई थी। आधुनिकता के नाम पर आज तो गजब की विचारधारा दिख जाती है कहीं-कहीं खैर हम बात अभी आधुनिक कला के शुरुआती दिनों की कर रहे हैं इसलिए अभी वहीं ठहरते हुए बात करते हैं।

रॉकॉको शैली जो फ्रांस, इटली सहित मध्य यूरोप में फैला हुआ था, जहां नक्काशियों का पूरा कुनबा भरा पड़ा था, जहां नक्काशीदार सीप को ताड़ के पत्तों या घुमावदार लताओं के साथ जोड़कर लहरदार डिजाइनों को सजाया जाता था, वास्तु, चित्र, मूर्ति एवं आभूषणों आदि में जिसका बोलबाला था, से लोग ऊब रहे थे। अनावश्यक लहरदार डिजाइनों से लोगों का मन भर चुका था। लोग उसमें कुछ भयानक परिवर्तन देखना चाहते थे। कलाकार भी इस ऊब वाले संख्या में शामिल थे और विरोध के मूड में भी थे। फ्रेंच भी सत्ता के उथल-पुथल से जूझ रहा था खुद को बचा नहीं पा रहा था, तमाम झंझावातों से लड़ता हुआ अपने वजूद को बचा पाने हेतु संघर्ष में परेशान था। आम जनमानस बदलाव की बयार को तड़प रही थी।

कलाकार भी इससे अछूते नहीं रहना चाहते थे। लुई पंद्रहवां को शासक बनने से पूर्व व बाद में भी काफी कुछ झेलना पड़ा पर कला में काफी अच्छा कार्य हुआ। पोंपेई के उत्खनन में ग्रीक की प्राचीनतम कलाकृतियां मिलीं जिस पर प्रसिद्ध जर्मन विद्वान विंकेलमान ने खूब सारे लेख लिखे। लोगों में ग्रीक कला एक बार पुनः आदर्श रूप में प्रस्तुत हुई। कलाकार भी पीछे नहीं रहना चाहते थे। जॉक दाविद् भी यहां की यात्रा कर चुका था। नये पुराने का ये चक्र चलता ही रहता है। हमें लगता है कि हम कुछ नया कर रहे हैं जबकि वो पहले ही हो चुका होता है। नवशास्त्रीयतावाद में ग्रीक के आदर्श रूप का पुनः दर्शन तो है ही और मानव शरीर उनके सौंदर्य, वेशभूषा का भी आदर्श रूप दर्शित होता है खैर प्राप्त मूर्तियों एवं अवशेषों से कलाकार एक बार फिर कुछ नया करने की

ताक में थे जिसमें प्रमुख भूमिका थी 30 अगस्त 1748 में पेरिस के एक समृद्ध परिवार में जन्में जॉक लुई डेविड (जॉक दाविद) की। पिता का साया बचपन में ही उठ गया था, जीवन संघर्समय हो गया था पर जल्द ही खुद को संभाल लिया था दाविद ने। वास्तुकारों के बीच रहना था। मां और चाचा को इनमें भविष्य का वास्तुकार नजर आ रहा था पर इनका मन चित्रों में रमता था लगातार ड्राइंग करना आदत में शुमार हो चुका था, आप जल्द ही एक महान कलाकार बनना चाहते थे, रॉकॉको शैली के प्रमुख चित्रकार फ्रांस्वा बाउचर जिन्होंने भी अपने कृतियों के माध्यम से कुछ विशेष बदलाव की बात रखी थी, उम्मीद की किरणें उनके कृतियों में भी नजर आ रही थी, से तथा कलाकार जोसेफ से सीखते हुए दाविद् निरंतर अच्छा करते जा रहे थे। राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु कई बार विफलताओं से सामना हुआ पर निराशा को निराश होना पड़ा और आप अपने कृति %एरासिस्ट्रेटस डिस्कवरिंग द कॉज़ ऑफ़ एंटिओकस डिसीज% (कैनवास पर तैल), का निर्माण करते हैं और प्रिक्स डी रोम से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। उपर्युक्त तैल चित्र में मरीज, बीमारी, एवं बीमारी के कारण का पता लगाने का प्रयास करता वैद्य है। माहौल गमगीन है। कृति ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है।

निकोलस पूसान तथा कैरेबेज्जियो जैसे 17वीं सदी के कलाकारों के चित्रों का अध्ययन करने का मौका भी आपको मिला। जर्मन कलाकार अंतोन रैफेलमिंग्स से परिचय के दरम्यान ही आपकी पहुंच विंकेलमैन के सैद्धांतिक लेखों तक हो सकी, पोंपेई से प्राप्त मूर्तियों और अवशेषों से प्रभावित होकर ही नवशास्त्रीयतावाद का उदय हो सका, ग्रीक शैली का अपडेट वर्जन कहा जा सकता है इस वाद को।

देश में उथल-पुथल जैसा माहौल था और इसी वजह से दाविद् कभी पक्ष कभी विपक्ष की भूमिका में आ जाते थे पर तमाम झंझावातों से पार पाते हुए आपकी कृतियां निखरती जा रही थी, प्रतिनिधित्व की भूमिका में आ गई थीं आपकी कई कृतियां, जो कई बार विवाद का कारण भी बनी। राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों को चित्रित करना आपकी विशेषता हो गई थी। तीन भाइयों के शपथ और जोश के बीच गमों में झूलती बहन भाव, जिसको इस शपथ के परिणामस्वरूप अपने को खोने का डर था, साथी महिलाओं के चेहरे पर भी गम साफ दिखाई दे रहा है। डर और उत्साह जैसे भावों को एक ही फलक पर समेटे हुए है कृति %द ओथ ऑफ होराथी%। यह चित्र नवशास्त्रीयतावाद के लिए महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। कृति %सुकरात की मृत्यु% जो प्लेटो की रचना फीडो पर आधारित है, में सुकरात को अपने अंतिम समय में भी पथ से न डिगते हुए दिखाया गया है, अंतिम समय में भी शिष्यों को शिक्षा देने की भव्य मुद्रा, दूसरा हाथ जहर के प्याले की तरफ बढ़ता हुआ है माहौल एकदम गमगीन है वहां उपस्थित सभी चेहरों पर गम तैर रहा है सिवाय मौत के द्वार पर खड़े सुकरात के। सफेद बिखरा-बिखरा सा लिबास ही उभर रहा है भव्य व्यक्तित्व के साथ। प्लेटो जो बिल्कुल ही शांत दिखाई दे रहा है के नीचे पड़ा संदेश पत्र भी व्यथित सा जान पड़ा है। सुकरात की तरफ जहर का प्याला बढ़ा रहा शिष्य इतना विवश है, दुखी है कि आंख मिला पाने की हिम्मत भी नहीं जुटा पा रहा। बाकी वहां मौजूद सभी के चेहरों पर दुख और संकट के भाव स्पष्टतः दिख रहे हैं। प्रकाश कृतिम है, शैली ग्रीक आधारित है पर चित्र जीवंत है। चित्र न्यूयॉर्क के म्युजियम में सुरक्षित है।

ब्रूट्स और उनके पुत्र संबंधी कृति में भी दुखों का पहाड़ उभर आया है। ब्रूट्स जो रोमन नेता था, की दर्दभरी दास्तां को बड़े ही जीवंत तरीके से उकेरने का प्रयास किया है दाविद् ने। आपके प्रमुख चित्रों में सिंहासनारोहण का भी जिक्र है। सामाजिक, राजनैतिक तथा ऐतिहासिक विषय, यूनान व रोम की वेशभूषा, हिष्ट-पुष्ट बलिष्ठ शरीर वाले आकृतियों के कलाकार दाविद में फ्रेंच राष्ट्रीय लोकसभा में चुनाव के बाद बहुत ही परिवर्तन देखने को मिला। कलाक्षेत्र में क्रांति सी आ गई पर फ्रेंच कलाक्षेत्र में खुद को ही श्रेष्ठ मनवाने के दंभ से ये बच नहीं सके। कला में तानाशाही रवैया अपनाने वाले कलाकार बन गये थे दाविद्। कई कलाकारों को इनके शैली पर काम करने हेतु मजबूर भी होना पड़ा। विवश होकर उनको भी नवशास्त्रीयतावाद का अनुयायी बनना पड़ा। रॉकॉको शैली लुप्तप्राय सी गई। नेपोलियन के राजा बनते ही दाविद् प्रमुख राजचित्रकार के रूप में नियुक्त हुए। बची खुची कसर अब पूरी हुई और कला के लगभग सभी विधाओं पर दाविद् की तानाशाही भारी पड़ने लगी। प्राचीनता की छाप लगभग हर जगह दिखने लगी। कृति %सबाइन महिलाओं का हस्तक्षेप मे% युद्ध और उसके विभीषिका को दर्शाने का प्रयास हुआ है। तलवार ताने योद्धाओं के बीच सबाइन महिलाएं उन्हें युद्ध करने से रोकने के प्रयास में दिखाई गई हैं। कुछ महिलाएं बच्चों को बचाने का कार्य भी कर रहीं हैं जो भविष्य को सम्हालने को दर्शाता है। युद्ध के कारण अस्त व्यस्त हुआ जीवन साफ झलक रहा है कृति में। डर को दिखा पाने में पूरी तरह सफल हुआ है कलाकार। कलाकार में जेल से वापसी के बाद कुछ बदलाव भी दिखे और उसको लगने लगा था कि नवशास्त्रीयतावाद के मूल में जो भी नियम हमने गढ़ें हैं वो इतने कठिन हैं कि बहुत दिनों तक नहीं टिक सकते। एक दुर्घटना की वजह से 1825 को इस महान कलाकार की मृत्यु हो गई। जल्दी ही उसके थोपे गये नियमों से बाकी कलाकार खुद को आजाद कर लिए और कला में एक नये वाद की ओर बढ़ चले। कला कभी भी किसी भी एक वादा में बंधकर नहीं रह सकती और ना ही रही है। कला बहती हुई नदी की भांति है जो बहते हुए तो पवित्र बनी रहती है और एक वाद से दूसरे वाद तक कुछ नये कुछ पुराने के साथ बहती रहती है और जिसे रोकने के प्रयास से उसके अस्तित्व पर संकट के बादल भी मंडराने लगते हैं।

आयोजन

उज्जैन पर यात्रा संस्मरण की पहली कृति लोकार्पित

उज्जैन। यात्रा वृत्तांत की हिंदी साहित्य में समृद्ध परंपरा रही है। लेकिन साहित्य नगरी उज्जैन अब तक इस विधा से अछूती थी। यहां महाकाव्य, खंडकाव्य, उपन्यास, व्यंग्य,कहानी, नाटक अनेक लिखे गये लेकिन यात्रा संस्मरण आज से पहले किसी ने नहीं लिखा। इस दृष्टि डॉ देवेंद्र जोशी की यह कृति यात्रा संस्मरण पर उज्जैन की पहली कृति है। नगर के साहित्य क्षेत्र की एक बड़ी कमी पूरी करने के लिए डॉ जोशी बधाई के पात्र हैं।

उक्त उद्गार मध्यप्रदेश में संघ द्वारा आयोजित डॉ देवेंद्र जोशी की पुस्तक यात्रा संस्मरण का लोकार्पण करते हुए वक्ताओं ने व्यक्त किए। पुस्तक का प्रकाशन निखिल प्रकाशन आगरा से हुआ है। कार्यक्रम के अतिथि के रूप में डा प्रेमानंद सरस्वती इंदौर, डॉ पूरन सहगल मंदसौर, कुलानुशासक डॉ शैलेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ शिव चौरसिया, उपस्थित थे। अध्यक्षता डॉ हरिमोहन बुधौलिया ने की। विश्व साहित्य सेवा ट्रस्ट आगरा द्वारा वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के रूप में चयनित हो चुकी इस पुस्तक के लोकार्पण समारोह को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए डॉ शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि यह कृति यात्रा संस्मरण विधा की सार्थकता निरूपित करती है। इसमें लेखक ने यात्रा संस्मरणों को नये रूप में प्रस्तुत करते हुए नई पीढ़ी के पाठकों को पुस्तक से जोड़ने का अभिनव कार्य किया है। डॉ शिव चौरसिया ने इस अवसर पर कहा कि भगवान राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, चीनी यात्री फाह्यान, ह्वेन सांग,से लेकर भारतेंदु हरिश्चंद्र, राहुल सांकृत्यायन और अज्ञेय तक यात्रा संस्मरण की परंपरा जारी रही। लेकिन साहित्य नगरी उज्जैन में आज से पहले किसी ने भी यात्रा वृत्तांत नहीं लिखा था। अतः उज्जैन के ज्ञात इतिहास में डॉ देवेंद्र जोशी की पुस्तक यह यात्रा संस्मरण विधा पर पहली कृति के रूप में दर्ज की जानी चाहिए। इस अवसर पर मंचस्थ अतिथियों को विश्व हिंदी प्रचारिणी महासभा इंदौर द्वारा विश्व साहित्य आकाश के चमकते सूर्य सम्मान से सम्मानित किया गया। जिसके तहत शाल, मान पत्र, मोतियों की माला और मैडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी तरह हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत नगर के करीब एक दर्जन साहित्यकारों को हिंदी रत्न हिंदी सेवी सम्मान प्रदान किए गए। सम्मानित होने वालों में श्रीमती सीमा जोशी, डॉ प्रकाश कडौतिया, पं रमण त्रिवेदी, डॉ देवेंद्र जोशी, डॉ हरीश कुमार सिंह, राजेश ठाकुर निर्झर,लता पंवार, अभिलाषा शर्मा, माया वदेका, डॉ पुष्पा चौरसिया, प्रफुल्ल शुक्ला, डॉ उर्मि शर्मा, संदीप सृजन, डॉ नेत्रा रावणकर, डॉ राजेश रावल आदि शामिल हैं।

इस अवसर पर आयोजित कवि गोष्ठी में प्रो रवि नगाईच, संदीप सृजन, डॉ राजेश रावल, प्रफुल्ल शुक्ला आदि ने रचनाएं सुनाई। सरस्वती वंदना सीमा जोशी ने प्रस्तुत की संचालन डॉ देवेंद्र जोशी ने किया। आभार डॉ हरीश कुमार सिंह ने माना।

वेब समीक्षा
आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

खौफ की इंतहा है , द मिस्ट्री ऑफ मोक्ष आईलैंड

आशुतोष राणा अभिनीत - ÷ द मिस्ट्री ऑफ मोक्ष आइलैंड ÷ एक हाई-फाई हॉरर मिस्ट्री थ्रिलर वेब सिरीज है, जो अंडमान और निकोबार आइलैंड के पास एक सुनसान द्वीप पर आधारित है । इस एक वेबसिरीज की कहानी एक फार्मास्युटिकल टाइकून डॉ. विश्वक सेन (आशुतोष राणा) के आसपास बुनीगई है । सिरीज़ का नायक डॉ विश्वक इस एक रहस्यमयी आइलैंड मोक्ष पर चला जाता है । वहाँ वह अपने रिश्तेदारों को प्रॉपर्टी के लालच में बुलाता है । कुछ वक्त बाद अचानक उस आइलैंड में कुछ अजीबोगरीब घटनाएं घटने लगती हैं और धीरे-धीरे विश्वक के परिवार वाले गायब होने लगते हैं. देखते - देखते यह खूसबुरत आइलैंड खौफनाक आइलैंड में बदल जाता है और एक खौफ़ चारों ओर फैल जाता है ।अनीश कुरूविला की निर्देशन में बनी यह तेलुगू सीरीज 20 सितंबर को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज हुई थी ।अब इस हॉरर-थ्रिलर ने ओटीटी पर सफलता के कीर्तिमान गढ़े

हैं।इस वेबसिरीज़ की कहानी एक उपन्यास -÷ सिक्स सस्पेक्ट÷ पर आधारित है । मर्डर मिस्ट्री और थ्रिलर से भरी हुई इस सिरीज़ में एक राजनैतिक कोण भी है जो सिरीज़ को रोचक बनाता है ।

आशुतोष राणा ने अपने एक्टिंग कैरियर में भले आदमी की और बुरे आदमी की भूमिका को समान अधिकार के साथ निभाया है । इस सिरीज़ में तो उन्होंने उत्कृष्ट अभिनय किया है । एक धनाढ्य उद्योगपति की भूमिका में आशुतोष राणा ने अपने प्रभावी अनुभव से शान-शौकत और रौब-दाब के साथ ही ऐसे व्यक्तित्व के पीछे छिपे खालीपन को भी बखूबी प्रकट किया है ।कहानी में वैसे तो आशुतोष राणान प्रमुख भूमिका में हैं मगर एक और कलाकार जतिन गोस्वामी जो आशुतोष राणा के बेटे विक्की की भूमिका निभा रहे हैं , कहानी उनके आसपास भी बुनी गई है ? । वेब सिरीज में विक्की को लोगो के प्रति असम्मानजनक व्यवहार करने वाले क्रूर व्यक्ति के रुप में प्रस्तुत किया गया है ।इस सिरीज़ में इन दोनों के अलावा प्रिया आनन्द, तेजस्वी मदिवाड़ा, आदर्श बालकृष्ण, सोनिया अग्रवाल, समर्थ और विजय आदिराज जैसे कलाकार भी हैं ।

तिग्मांशु धूलिया जो की बहुत बड़ी बड़ी फिल्मों जैसे ताण्डव और क्रिमिनल जस्टिस का निर्देशन कर चुके हैं , उनकी प्रतिभा यहाँ भी नज़र आती है और इस वेब सीरीज में भी इनका बेहतरीन काम दिखता है। ऋषि पंजाबी जो कि इस वेबसिरीज के सिनेमेटोग्राफर है इन्होंने फिल्म में इस तरह से रंग भरे हैं जैसे कोई कलाकार कैनवास पर रंग उतार रहा हो । फिल्म के पार्श्वसंगीत (बैकग्राउंड म्यूजिक) की बात करें तो रघु दीक्षित और केतन सोड़ा ने इस पर काफी मेहनत की है । किसी भी हॉरर थीम में माहौल बनाना सबसे अहम् होता है और पार्श्व संगीत इस दिशा में प्रभावी भूमिका निभाता है । फिल्म की एडीटिंग में कई झोल है और इस वेबसिरीज के सम्पादन में और भी ज्यादा कसाव हो सकता था । वैसे इस वेबसिरीज़ के कलाकार इसकी जान है जो की आपको बोरियत नही होने देते।

जिस एक उपन्यास - सिक्स स्पेक्ट्स ,पर आधारित है उस कधाक्रम के मुताबिक संदिग्धों पर भी अच्छे दृष्य संयोजन। हैं । विक्की के चूकि काफी दुश्मन हैं इसी बीच एक पार्टी में विक्की राय का मर्डर हो जाता है और संदिग्धों की लम्बी सूची बन जाती है ।संदिग्धों में विक्की के पिता आशुतोष राणा और एक वेटर मुन्ना (शशांक अरोड़ा) भी शामिल हैं । इतने संदिग्ध हैं तो काफी पुलिस इन्वेस्टीगेशन भी होता है मगर यही पुलिस इन्वेस्टिगेशन वाला पार्ट काफी खींचा हुआ लगता है जिसमें आपको देखते-देखते कई बार बोरियत महसूस हो सकती ही,यही इस सिरीज़ की सबसे बड़ी खामी है ।अगर आप मर्डर मिस्ट्री वाली वेब सीरीज के तलाश में है जिसमे कोर्ट में चलता हुआ मुकदमा और पुलिस की कसी हुई इन्वेस्टिगेशन(कुछ खींचा हुआ ही सही) देखने के शौखीन है तो आप इस वेबसिरीज को देख सकते है । इसके कुल नौ पार्ट्स है जो की ज्यादा लम्बे नही जिन्हे आप आसानी से बिना बोर हुए देख सकते हैं।

सीएम राइज विद्यालय बैतूल बाजार को मिला राज्यस्तरीय पर्यटन क्विज प्रतियोगिता में जिले का प्रतिनिधित्व करने का गौरव

बैतूल। मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय पर्यटन क्विज प्रतियोगिता 2024 में सीएम राइज शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बैतूल-बाजार को जिले का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त हुआ। यह प्रतियोगिता भोपाल के ऐतिहासिक कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन हॉल (मिंटो हॉल) में आयोजित हुई, जहां मध्य प्रदेश के 52 जिलों की जिला स्तरीय विजेता टीमों ने हिस्सा लिया।

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए सीएम राइज बैतूल-बाजार की टीम 26 सितंबर को भोपाल पहुंची थी। टीम के लिए मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा होटल पलाश में दो रात और तीन दिन की ठहरने की व्यवस्था की गई थी, जिसमें आवागमन, भोजन और भोपाल भ्रमण भी शामिल था। प्रतियोगिता के दौरान बैतूल जिले के प्रसिद्ध बालाजीपुरम पर आधारित प्रश्न भी पूछा गया। इस प्रतियोगिता का लाइव प्रसारण मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के यूट्यूब चैनल पर किया गया। सीएम राइज विद्यालय बैतूल-बाजार से प्रतियोगिता में कक्षा 12वीं की छात्रा तृप्ति मालवीय, कक्षा 11वीं की छात्रा चित्रा राठौर, और कक्षा 10वीं के छात्र अथर्व वर्मा ने श्रीमती प्रीति पोटफोड़े के मार्गदर्शन में भाग लिया। विद्यालय की प्राचार्य डॉ. साधना हेंड भी मिंटो हॉल में उपस्थित होकर टीम का उत्साहवर्धन करने पहुंचीं और मार्गदर्शक शिक्षिका श्रीमती प्रीति पोटफोड़े के अमूल्य योगदान की सराहना की।

यह उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता का जिला स्तरीय चरण भी बैतूल में आयोजित हुआ था, जिसमें जिले के 153 स्कूलों की टीमों ने भाग लिया था। सीएम राइज विद्यालय की टीम ने 10 मल्टीमीडिया राउंड में 253 अंक प्राप्त कर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया था, जिससे उन्हें राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिला। इस पूरी प्रतियोगिता को मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के यूट्यूब चैनल पर देखा जा सकता है।

18 दिवसीय श्रीरामलीला महोत्सव शिव विवाह के साथ प्रारंभ...

नर्मदापुरम। 144 वर्ष में प्रवेश कर चुकी श्रीरामलीला महोत्सव का शुभारंभ शिव विवाह और नारद मोह मंचन के साथ प्रारंभ हो गया, नर्मदा घाट स्थित तिलक भवन के सामने सत्संग चौक पर श्रीरामलीला महोत्सव मनाने के लिए विशाल मंच बनाया गया है, रामलीला मंचन करने वाले भगवान के पात्र यहां लीला का सजीव चित्रण कर लोगों को आकर्षित करती हैं। श्रीरामलीला महोत्सव आयोजन के संयोजक प्रशांत दुबे उर्फ मुन्नू का आयोजन में महत्वपूर्ण और विशेष भूमिका रहती है।

पानी खींचते समय कुएं में गिरने से युवक की दर्दनाक

बैतूल। मासोद चौकी क्षेत्र अंतर्गत ग्राम शिरडी में एक युवक की कुएं में गिरने से मौत हो गई है। सूचना मिलती की पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया गया। मासोद चौकी प्रभारी बसंत ने बताया कि शनिवार सुबह ग्राम शिरडी में राजेश पिता पंजाबराव मगर्दे उम्र 42 वर्ष घर के पास स्थित कुएं से पानी खींच रहा था। युवक का पैर फिसल जाने के कारण वह कुएं में गिर गया। पानी में डूबने से युवक की मौत हो गई। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से युवक के शव को कुएं से बाहर निकाला गया। शव को पोस्टमार्टम के लिए प्रभात पट्टन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया है। युवक के कुएं में गिरने और मौत हो जाने के बाद गांव में मातम छा गया। घटनास्थल पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई थी। घटना शनिवार सुबह की बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि युवक के घर के पीछे स्वयं का कुआं था जिससे पानी निकलते समय हादसा हो गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जा शुरू कर दी है।

नवविवाहिता ने सुसाइड नोट पैर पर लिखा लगा ली थी फांसी

मामले में पति, जेठ, सास, ननद की हुई गिरफ्तारी, पुलिस ने भेजा जेल

बैतूल। बोरदेही थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम बासन्या में 22 सितंबर को आखिरी संदेश अपने प्यारे पापा को लिख कर लाडली बेटी फांसी पर झूल गई थी। मामला बोरदेही थाना क्षेत्र के गांव बासन्या का है जहां 22 सितम्बर की रात नवविवाहिता ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी।फांसी लगाने के पहले नवविवाहिता

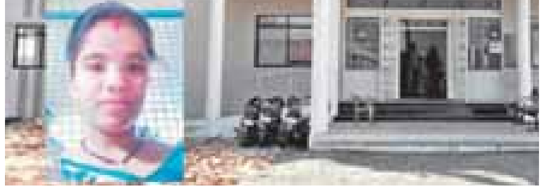

ने अपने पैर पर सुसाइड नोट लिखा जिसमें मौत का कारण पति, जेठ, ननद और सास को बताया वही अपने पापा को मार्मिक संदेश भी लिखा था इस मामले में पुलिस पोस्टमार्टम रिपोर्ट के इंतजार में थी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम बासन्या में बीते शनिवार 22 सितंबर को रात्रि में नवविवाहिता शिवानी ने फांसी लगा ली थी फांसी लगाने से पहले मृतिका ने पैर पर सुसाइड नोट,लिखा था जिसमे उसने अपनी मौत का कारण पति जेठ सांस ननद को आरोपी बताया गया शिवानी की शादी 5 माह पहले बासन्या निवासी मगरिया के साथ हुई थी। मायके वालों ने पुलिस को बताया कि शादी के बाद से उनकी बेटी को दहेज के बार बार प्रताड़ित कर रहे थे मृतिका ने आत्महत्या करने के पहले अपने पैर की जांघ पर सुसाइड नोट लिखा है, जिसमें अपनी मौत का कारण पति, ननद, जेठ और सास को बताया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जाच की थी। पुलिस ने चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पति मंगरिया उर्फ राजकुमार गांठे, पिता पतिराम गांठे, निवासी बासन्या जेठ गणेश गांठे पिता पतिराम गांठे, निवासी बासन्या सास जमुना गांठे पति पतिराम गांठे,निवासी बासन्या ननंद सुमन गांठे, पिता पतिराम गांठे आरोपियों में शामिल है।

प्राथमिक कृषि साख समिति जामठी की आमसभा में किसानों के विकास चर्चा पर हुआ मंथन

किसानों को योजनाओं का लाभ उठाने की सलाह, 100 प्रतिशत वसूली का लक्ष्य तय

- **रबी सीजन की तैयारी और योजनाओं पर हुई चर्चा, सैकड़ों किसानों ने लिया भाग**

बैतूल। बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख समिति मर्यादित जामठी की आमसभा का आयोजन भव्य रूप से किया गया, जिसमें किसानों के हितों और विकास के लिए महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। मुख्य अतिथि राजेश आहूजा और पूर्व संचालक गण पराग गौर, रामकिशोर नहारिया, चिरौंजी पटेल, खुशी लाल उइके, रामबकस मनमोहन पारधे, जनपद सदस्य अर्जुन धुर्वे और सरपंच पुनूराम वाड़िवा की गरिमामयी उपस्थिति में यह आयोजन संपन्न हुआ।

आमसभा में समिति के प्रबंधक अशोक देशमुख ने विषय सूची के अनुसार संस्थाओं के क्रियाकलापों, आगामी वर्ष के बजट और रबी सीजन के लिए तैयारियों पर विस्तार से जानकारी दी। खाद वितरण, नगद पंजीयन, धान और सोयाबीन की वसूली जैसे प्रमुख मुद्दों पर भी चर्चा की गई। मुख्य अतिथि राजेश आहूजा ने अपने उद्बोधन में कहा, किसानों को सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ लेना चाहिए, जिससे उनका आर्थिक विकास हो सके। इसके साथ ही, समिति की वसूली 100 प्रतिशत करने के लक्ष्य को सभी किसान सदस्यों के सहयोग से ही हासिल किया जा सकता है। इस आमसभा में सैकड़ों किसान सदस्य उपस्थित रहे और सभी ने आगामी वर्ष के लिए संस्था की योजनाओं पर सहमति जताई। जानकारी संस्था के प्रबंधक अशोक देशमुख द्वारा दी गई।

स्वास्थ्य केंद्र मुलताई में बीएमओ को अकेले ही करना पड़ रहा है शव परीक्षण

- **व्यवस्था सुधार के प्रयास बने मुसीबत**

बैतूल/मुलताई– लंबे समय से रेफर केंद्र बनकर रह गए मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था में सुधार के प्रयास हाल ही में पदस्थ बीएमओ पंचम सिंह को भारी पड़ने लगे हैं। बिगड़ी व्यवस्था को सुधारने के प्रयास हुए तो कुछ कर्मचारी आरोप लगाने पर आमादा है तो कुछ काम से लापता नतीजा यह की ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी को अकेले ही दिन में दो-दो पोस्टमार्टम बगैर सहयोगी के करना पड़ रहा है। बीएमओ बताते हैं कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को आम व्यक्ति के लिए सुविधाजनक बनाने के लिए बहुत से सुधार करने की आवश्यकता है और इसके लिए संपूर्ण स्टाफ राजनीतिक लोग और आम आदमी के सहयोग की भी आवश्यकता है। किंतु देखने में यह आ रहा है कि बरसों से एक ही पैटर्न पर कार्य करने वाले लोगों को समस्या भी आ रही है किंतु आम व्यक्ति को स्वास्थ्य केंद्र का लाभ मिले इसके लिए कुछ ठोस कदम उठाने आवश्यक है। स्वास्थ्य केंद्र में ठेका पद्धति पर सफाई कर्मचारी तैनात किया गया था जिसका कार्य पोस्टमार्टम में सहयोग करना होता है जो शव परीक्षण के बाद शव को व्यवस्थित करता है किंतु मुलताई में तैनात कर्मचारी बगैर बताएं दो दिनों से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नहीं पहुंचा। फोन करके बार-बार बुलाने पर टालमटोल कर समय बर्बाद करता रहा इसलिए मजबूरी में अकेले ही जामगांव निवासी संजय धुर्वे जिसका शव कुएं में मिला था और बीरूल दुर्घटना में हुई एक युवक की मौत का उन्हें अकेले ही पोस्टमार्टम करना पड़ा। किंतु बड़ा प्रश्न यह है कि स्वास्थ्य केंद्र में कर्मचारियों की कमी एवं कुछ की मनमानी के चलते व्यवस्था में सुधार कैसे हो होगा। बीएमओ पंचम बताते हैं कि बगैर सूचना के चले गए कर्मचारियों के संबंध में सीएमएचओ को पत्र लिखकर मार्गदर्शन मांगा गया है इसके साथ ही पर्ची काटने के लिए दो व्यक्ति एवं गार्ड की नियुक्ति को लेकर भी वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया रोगी कल्याण समिति का प्रस्ताव भी जिला स्वास्थ्य एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी को भेजा गया है। बेकार पड़ी एम्बुलेंस को भी आम व्यक्ति के लिए उपयोगी बनाया जा सके इसके प्रयास किए जा रहे हैं वरिष्ठ अधिकारियों से मार्गदर्शन लिया जा रहा है। नवागत ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी पंचम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्थाओं में सुधार के प्रायश तो कर रहे हैं किंतु यह प्रयास कीस हद तक सफल होगे इसका निर्धारण तो समय के साथ होगा किंतु स्वास्थ्य केंद्र में सक्रिय एंबुलेंस रैकेट, निजी स्वास्थ्य केदो भिजवाने के लिए काम करने वाले एजेंट एवं रेफर पॉलिसी को तोड़ पाना आसान नहीं होगा।

इंदौर में आयोजित 10वां राज्यस्तरीय सम्मान समारोह

पूजा तिवारी को सेवा के लिए किया गया सम्मानित

बैतूल/भौंरा। इंदौर में आयोजित 10वां राज्यस्तरीय सम्मान समारोह 2024 में बैतूल जिले के शाहपुर की निवासी पूजा तिवारी को पुलिस परामर्श केंद्र शाहपुर में पिछले 20 वर्षों से दी जा रही उनकी निःशुल्क सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। पूजा तिवारी ने अपने निस्वार्थ सेवा कार्य से समाज में शांति और सहयोग का संदेश दिया है। वे परामर्श केंद्र में महिलाओं और पीड़ितों को सहायता प्रदान कर रही हैं।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सावित्री ठाकुर राज्यमंत्री, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारत सरकार उपस्थित रहीं। अध्यक्षता कैलाश विजयवर्गीय मंत्री, नगरीय प्रशासन विभाग, मध्यप्रदेश शासन ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव, खंडवा की महापौर अमृता अमर यादव, धार के भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, इंदौर भाजपा नगर अध्यक्ष गौरव रणदिवे और वरिष्ठ अधिवक्ता एवं समाजसेवी जूही भार्गव भी कार्यक्रम में शामिल हुए। सम्मानित होने के बाद पूजा तिवारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह सम्मान न केवल मेरे लिए बल्कि उन सभी के लिए है। जो मेरे साथ इस सेवा कार्य में जुड़े हैं। मैं पुलिस परामर्श केंद्र शाहपुर में महिलाओं और जरूरतमंदों की मदद करने के अपने प्रयासों को और सशक्त बनाने का संकल्प लेती हूं। समाज में परिवर्तन लाने का यह सफर यूं ही जारी रहेगा। विनय उजाला परिवार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम ने समाज सेवा के क्षेत्र में योगदान देने वालों को मंच प्रदान किया और उनकी निस्वार्थ सेवाओं को सराहा।

जिले के 7 युवा पैरा कमांडो फिजिकल टेस्ट के लिए हुए चयनित

बैतूल। भारतीय सेना की अग्निवीर भर्ती परीक्षा में जिले के 35 युवाओं का चयन हुआ है, जिसमें से 7 युवा पैरा कमांडो फिजिकल टेस्ट के लिए चयनित हुए है। पैरा कमांडो के लिए चयनित युवाओं का आगामी 1 अक्टूबर को महू एआरओ में फिजिकल टेस्ट होगा। इन युवाओं को कमांडो ग्रुप बैतूल के फिजिकल ट्रेनर पवन कुमार अहाके पिछले कई महीनों से प्रशिक्षण दे रहे थे। श्री अहाके ने युवाओं को मन लगाकर देश की सेवा करने और जिले का नाम रोशन करने की बात कही। आर्मी फिजिकल ट्रेनर पवन कुमार अहाके द्वारा निरंतर 5 वर्षों से सेना भर्ती, मध्य प्रदेश पुलिस भर्ती के लिए युवा जवानों को शारीरिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। श्री अहाके के मार्गदर्शन में विगत वर्ष में 26 युवा अग्निवीर सैनिक रैली में चयनित हुए थे। इस वर्ष कंमाडो ग्रुप बैतूल से 35 युवा चयनित हुए जो राष्ट्रहित में अपना योगदान देंगे। श्री अहाके ने बताया कि सेना भर्ती में मेडिकल में बाहर होने के बाद ठाना कि जिले के हर गांव से युवाओं को राष्ट्र हित के प्रति जागरूक कर देश के लिए जागरूक करना है। इसी उद्देश्य को लेकर वर्तमान में मिशन मप्र पुलिस भर्ती के लिए श्री अहाके 70 छात्र-छात्राओं को स्टेडियम में प्रशिक्षण दे रहे है। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवा आगामी अक्टूबर, नवंबर माह में मध्य प्रदेश पुलिस भर्ती में शामिल होगे।

मंदिर के सामने आ रहा घरों से निकलने वाला गंदा पानी

बैतूल। आमला के गांव में मंदिर के सामने गंदगी फैल रही है पूजा अर्चना करने वालो को घरों का निकले वाला गन्दा पानी से होकर गुजरना पड़ रहा है इससे लोगो की आस्था के साथ पंचायत द्वारा खिलवाड़ किया जा रहा है। लेकिन गाव में घरों का निकलने वाला गन्दा पानी मंदिर के सामने से जाने पर सरपंच सचिव के द्वारा कोई कारवाई क्यों नही की गई है। सरपंच सचिंव की कार्यप्रणाली पर ग्रामीणों ने सवाल खड़े कर दिए है जानकारी के अनुसार जनपद की ग्राम पंचायत रमली के ग्रामीणों ने पंचायत के सरपंच सचिव पर निष्क्रियता का आरोप लगाते हुए जनपद सीइओ व तहसीलदार आमला को शिकायत कर गंदगी फैलाने वाले व्यक्ति की शिकायत की है जिसमे ग्राम पंचायत रमली के मुख्य गांव में एक व्यक्ति ने जानबूझकर काली माता मंदिर के सामने मुख्य सड़क के पास गंदगी फैलाने का आरोप लगाया है। जनपद व तहसीलदार को लिखित शिकायत मे दिनेश दौ ? के शुशांत दौ ?के ने उल्लेख किया

है की ग्राम के नथन मालवीय द्वारा होन घर के शौचालय के गंदे पानी की निकासी का पाइप काली माता मंदिर के सामने मुख्य सड़क पर गया जिससे निकासी के पाइप से मल मूत्र का गंदा पानी मंदिर के सामने मार्ग पर जमा हो रहा है छोटे बच्चे सड़क पर खेलते है गंदे पानी से उनका स्वास्थ खराब हो सकता है पिछले एक माह से मंदिर के सामने और आवाजही मार्ग पर गंदगी फैली हुई है जिसके कारण मंदिर मे रोजाना पूजा करने आने वाले लोगो की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही है वही गंदगी फैली होने के कारण आसपास रहने वालेपरिवार का वहां रहना दूभर हो गया है और उसके किसी परिवार के सदस्य को किसी गंभीर बीमारी के लगने की आशंका से भी इंकार नहीं किया जा सकता। पंचायत को शिकायत देने के बावजूद कार्रवाई नहीं हो रही है। ग्राम पंचायत रमली के दिनेश दोड़के ने बताया कि नथन बाई द्वारा मंदिर के पास गंदगी फैलाते हैं और जब उन्हें गंदगी फैलाने से रोका जाता है तो वे समझाइस देने वाले नागरिकों के साथ गाली-गलौज व लड़ने-झगड़ने के लिए उतारू हो जाते हैं। इन दोनों परिवारों के घरों से रोजाना हजारों लीटर गंदा पानी, कपड़े धोने, रसोई का पानी, बाथरूम का गंदा पानी और कूड़ा-कर्कट उसके घर के दोनों और आता है।

ध्वज पूजन के साथ 2 अक्टूबर से शुरू होगा रामलीला महोत्सव

67 वर्षों के इतिहास के साथ इस बार भव्य रूप से आयोजित होगा रामलीला का बारह दिवसीय मंचन

बैतूल। श्रीकृष्ण पंजाब सेवा समिति द्वारा आयोजित 67वें रामलीला और दशहरा महोत्सव की तैयारियां जोरों पर हैं। इस साल 2 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 2024 तक चलने वाला यह आयोजन और भी भव्य होने जा रहा है। हर वर्ष की तरह इस बार भी श्रीकृष्ण पंजाब सेवा समिति, पंजाब युवा सेवा समिति, और श्रीकृष्ण पंजाबी महिला कीर्तन मंडल मिलकर इस ऐतिहासिक रामलीला और दशहरा महोत्सव का आयोजन कर रहे हैं। इस बार आदर्श श्री इंद्रलोक रामलीला मंडल, खजुरी (सीधी) का पारंगत दल बारह दिवसीय रामलीला का मंचन करेगा। यह आयोजन प्रतिदिन रात 9 बजे बैतूल गंज के रामलीला मैदान में होगा।

भव्य रामलीला मंचन से सजेंगे सांस्कृतिक प्रसंग– इस बार रामलीला के प्रसंगों को और भी सुंदर और आकर्षक तरीके से पेश किया जाएगा। रामलीला में पहले दिन 2 अक्टूबर को ध्वज पूजन, नारदमोह, विश्वमोहिनी स्वयंवर और रावण जन्म जैसे प्रसंग मंचित किए जाएंगे। इसके बाद 3 अक्टूबर को श्रीराम और सीता जन्म का दृश्य और मुनि आगमन प्रस्तुत किया जाएगा। 4 अक्टूबर को यज्ञ रक्षा, ताड़का वध, और अहिल्या उद्धार का प्रसंग दिखाया जाएगा। रामलीला में दर्शकों के लिए रोज नए-नए दृश्य और प्रसंगों का मंचन किया जाएगा, जो पूरे 12 दिन चलेगा।

श्रीराम विवाह की भव्य शोभायात्रा– इस बार के रामलीला महोत्सव का एक विशेष आकर्षण 6 अक्टूबर को होने वाला श्रीराम विवाह जुलूस है। श्रीराम की बारात बैतूल के श्रीकृष्ण मंदिर से प्रारंभ होकर माता मंदिर पेट्रोल पंप तक जाएगी, जहां श्रीराम और सीता का विवाह संपन्न होगा। इस शोभायात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रहने की संभावना है, जो इस अद्वितीय धार्मिक आयोजन का हिस्सा बनेंगे।

रामलीला में महिलाओं के लिए विशेष व्यवस्था– समिति ने रामलीला में आने वाली महिलाओं के लिए विशेष बैठने की व्यवस्था की है। रामलीला मैदान पर महिलाओं को दर्शकों के बीच अलग से स्थान प्रदान किया जाएगा ताकि वे बिना किसी कठिनाई के रामलीला का आनंद ले सकें। रामलीला का आयोजन रात 9 बजे से प्रतिदिन किया जाएगा, जिसमें दर्शकों को विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रसंगों का आनंद उठाने का अवसर मिलेगा।

विजयदशमी पर विशाल पुतला दहन और आतिशबाजी का प्रदर्शन– महोत्सव के दौरान 12 अक्टूबर को विजयदशमी के अवसर पर बैतूल के स्टेडियम ग्राउंड में रावण और कुंभकर्ण के विशाल पुतलों का दहन किया जाएगा। इसके साथ ही रंगीन आतिशबाजी का अद्भुत प्रदर्शन होगा, जो देखने वालों को मंत्रमुग्ध कर देगा। इस दौरान शाम 5 बजे से पंजाबी कृष्ण मंदिर से विजय जुलूस भी निकाला जाएगा। जुलूस में श्रीराम और सीता रावण सहित अन्य किरदारों को सजाया जाएगा, एवं स्टेडियम ग्राउंड पर राम रावण युद्ध दर्शकों के सामने प्रस्तुत होगा।

67 वर्षों का अनोखा इतिहास– समिति के अध्यक्ष कश्मीरी लाल बतरा ने बताया श्रीकृष्ण पंजाब सेवा समिति, बैतूल का रामलीला और दशहरा महोत्सव अपने 67 वर्षों के इतिहास के साथ इस बार भी भव्य रूप से आयोजित हो रहा है। उन्होंने बताया कि यह आयोजन बैतूल में धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को बनाए रखते हुए हर साल और अधिक भव्य होता जा रहा है। इस बार भी रामलीला के आयोजन को लेकर बैतूल के लोग बेहद उत्साहित हैं। हर वर्ष इस आयोजन को सफल बनाने में श्रीकृष्ण पंजाब सेवा समिति, पंजाब युवा सेवा समिति और श्रीकृष्ण पंजाबी महिला कीर्तन मंडल का विशेष योगदान है।

जाह्नवी ने तमिल से अपनी मां जैसा प्यार मांगा

बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर इन दिनों 'देवरा' फिल्म के वजह से चर्चाओं में हैं। 27 सितंबर को रिलीज होगी जाह्नवी कपूर की यह फिल्म। इसमें जाह्नवी साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर के साथ नजर आएंगी। बता दे इस फिल्म से जाह्नवी साउथ फिल्म में डेब्यू करने जा रही हैं। जूनियर एनटीआर और जाह्नवी की फिल्म 'देवरा' रिलीज़ होने में ज्यादा दिन नहीं हैं।

इन दिनों जाह्नवी फिल्म के प्रमोशन में व्यस्त हैं। और हाल ही में एक प्रमोशनल इवेंट में जाह्नवी ने तमिल भाषा में फैंस से बात किए, जिसकी वीडियो अभी तेजी से वायरल हो रही हैं। हाल ही में चेन्नई में 'देवरा' फिल्म के प्रमोशन के लिए आयोजित एक इवेंट में जाह्नवी ने तमिल में बात करके सबको चौका दिया हैं। इसके वजह से जाह्नवी की अभी बहुत तारीफ हो रही हैं।

इवेंट के दौरान जाह्नवी ने तमिल में कहा कि चेन्नई उनके लिए खास है, क्योंकि उनकी मां दिवंगत एक्ट्रेस श्रीदेवी की चेन्नई से बहुत प्यारी यादें जुड़ी हुई हैं। जाह्नवी ने आगे कहा कि मुझे उम्मीद है कि आप मुझे भी वही प्यार देंगे जो आपने मेरी मां को दिया था। आपका प्यार ही वह वजह है जिसकी वजह से हम आज यहां हैं, और मैं हमेशा आप सभी की आभारी रहूंगी।

'मिर्जापुर' में कालीन भैया बनेंगे रितिक रोशन

मिर्जापुर' सबसे चर्चित और लोकप्रिय सीरीज में से एक है। इस पॉपुलर सीरीज के तीसरे सीजन को भले ही दर्शकों से पहले दो सीजन जितना प्यार न मिला हो, लेकिन किरदारों की लोकप्रियता आज भी कायम है। अब सोशल मीडिया पर हो रही चर्चाओं से कयास लगाया जा रहा है कि 'मिर्जापुर' पर जल्द ही फिल्म बन सकती है। इस फिल्म में बॉलीवुड के एक सुपरस्टार कालीन भईया का किरदार निभाते दिखाई देंगे।

ये सुपरस्टार और कोई नहीं बल्कि रितिक रोशन हैं। सोशल मीडिया पर हो रही चर्चाओं की मानें तो रितिक रोशन मिर्जापुर पर बनने वाली फिल्म में 'कालीन भईया' का किरदार निभाएंगे। इस चर्चा के बाद से पंकज त्रिपाठी के चाहने वालों ने रितिक रोशन से उनकी तुलना करना शुरू कर दिया। कई सोशल मीडिया यूजर्स ने दावा कि रितिक इस रोल के लिए ठीक नहीं हैं, वे इस रोल में सही नहीं बैठेंगे। सोशल मीडिया पर चल रही इन अफवाहों पर डायरेक्टर गुरमीत सिंह ने रिएक्ट किया।

उन्होंने इस पर कोई ऑफिशियल कमेंट न करते हुए कहा कि निर्माता और स्टूडियो के लोग इस पर विचार कर रहे हैं। फिल्म बनेगी या नहीं इस पर वही लोग कुछ कह सकते हैं। पॉपुलर वेब सीरीज 'मिर्जापुर' की बात करें तो इसका पहला सीजन साल 2018 में आया था। इस सीरीज ने ही पंकज त्रिपाठी को इंडस्ट्री में उन्हें उनका हक दिलाया. शुरुआत से ही 'मिर्जापुर' की पॉपुलैरिटी बनी हुई है।

'रेस 4' में सैफ और सिद्धार्थ साथ में

रेस फ्रेंचाइजी बॉलीवुड के सबसे बड़ी फ्रेंचाइजी में से है। इस फ्रेंचाइजी का अब तक तीन फिल्में रिलीज हुई हैं। तीनों ही फिल्म को दर्शकों से अच्छा रिस्पांस मिला था। और अब इस फ्रेंचाइजी की चौथी फिल्म 'रेस 4' बनने जा रही हैं। 'रेस 3' में सलमान खान मुख्य किरदार में दिखे थे। लेकिन इस बार फिल्म से सलमान को हटा दिया गया हैं। सलमान भी 'रेस 4' में इंटरेस्ट नहीं हैं। रिपोर्ट के मुताबिक रेस फ्रेंचाइजी में सैफ अली खान की वापसी होने जा रही हैं।

'रेस 1' और 'रेस 2' में सैफ अली खान मुख्य किरदार में दिखे थे। लेकिन 3 में में मेकर्स ने सैफ को हटाकर सलमान को कास्ट किया था। और अब 'रेस 4' में सैफ की वापसी हो रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 'रेस 4' में सैफ अली खान के साथ सिद्धार्थ मल्होत्रा भी दिखेंगे। बताया जा रहा है कि फिल्म में सिद्धार्थ निगेटिव रोल में दिखेंगे। हालांकि इसको लेकर अभी तक ऑफिशियल बयान नहीं आया हैं। लेखक शिराज अहमद ने 'रेस 4' को लेकर अपडेट दिया हैं।

रियल बॉक्स

अक्षय के बुरे दिन, पर इतने बुरे कैसे

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हर व्यक्ति के जीवन में अच्छा वक्त भी आता है और बुरा भी। अपनी मेहनत से लोग बुरे वक़्त से बाहर निकल जाते हैं। लेकिन, खिलाड़ियों और कलाकारों के जीवन में आने वाला बुरा वक़्त उन्हें अंदर तक तोड़ देता है। यदि फिल्म कलाकारों का जिक्र किया जाए, तो उनकी फिल्मों का फ्लॉप होना बेहद दुखदायी होता है। ऐसा भी नहीं कि कलाकारों के जीवन में कभी आएगा ही नहीं ! फिर, वे कितने भी लोकप्रिय क्यों न हों, दर्शक उनकी हर फिल्म पसंद नहीं करते। दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, मीना कुमारी और माधुरी दीक्षित जैसे कलाकार भी इस दौर से गुजरे हैं। आज के दौर के सलमान खान, आमिर खान और शाहरुख़ खान की भी कई फ़िल्में फ्लॉप हुई। यही इन दिनों अक्षय कुमार के साथ हो रहा है। जबकि, एक समय था जब अक्षय कुमार का जलवा था और उनकी हर फिल्म बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाती थी। उनकी एक्शन देखकर ही उन्हें 'खिलाड़ी कुमार' नाम दिया गया। लेकिन, अब वो वक़्त नहीं रहा।

अपने डांस और एक्शन से दर्शकों के दिलों पर राज वाले इस कलाकार ने अपने करियर में कई हिट फ़िल्में दी। लेकिन, अचानक कुछ ऐसा हुआ कि उनकी फ़िल्में दर्शकों की पसंद से बाहर हो गई। याद किया जाए तो कोरोना काल के बाद उनकी किसी फिल्म को अच्छी सफलता नहीं मिली। बड़े बजट की कई फ़िल्में बुरी तरह फ्लॉप हुई। इस दौरान सिर्फ 'ओएमजी-2' और 'स्त्री-2' ही चली, पर इन दोनों फिल्मों केंद्रीय भूमिका में अक्षय नहीं हैं। दर्शकों को वो वक्त भी याद है जब अक्षय कुमार का बॉक्स ऑफिस पर दबदबा बना रहता था। मगर अब शायद इस एक्टर को नजर लग गई। उनकी अच्छी फ़िल्में भी दर्शकों को प्रभावित नहीं कर रही।

अक्षय कुमार के लिए प्रोफेशनली सब कुछ ठीक नहीं चल रहा। उनकी फिल्में लगातार फ्लॉप हो रही हैं। 'सरफिरा' को तो बहुत ख़राब रिस्पॉन्स मिला। इसके पहले बड़े मियां छोटे मियां, सम्राट पृथ्वीराज, मिशन रानीगंज, सेल्फी, राम-सेतु सभी फिल्में फ्लॉप रहीं। 2022 के बाद से उन्होंने सिर्फ एक हिट फिल्म 'ओएमजी-2' दी। लेकिन, वो दरअसल उनकी फिल्म नहीं थी। अक्षय की भूमिका को समझने वालों का कहना है कि वे कॉमेडी फिल्मों के जरिए वापस लौट सकते हैं। अक्षय को अपना करियर बचाने के लिए कॉमेडी फिल्मों की जरूरत है। अगले साल उनके पास वेलकम टू जंगल, हाउसफुल-5 और 'हेरा-फेरी-3' जैसे प्रोजेक्ट्स हैं। ये सीक्वल फ़िल्में हैं और इनकी पिछली फिल्मों का वे अहम हिस्सा रहे हैं। कॉमेडी में तो अक्षय कुमार माहिर हैं ही, ये फ़िल्में कमर्शियल और इंटरटेनर भी हैं।

आश्चर्य इस बात का कि अक्षय की कई ऐसी फिल्में फ्लॉप हुई, जिनका कंटेंट अच्छा था। उनकी मिशन रानीगंज, सरफिरा अच्छी फिल्म है, पर नहीं चल सकी। यह भी संभव है कि दर्शक उनकी फिल्मों के एक जैसे कंटेंट से थक गए हों। हाल ही में आई उनकी फिल्म 'सरफिरा' तो सूर्या की तमिल फिल्म 'सोरारई पोटरु' का हिंदी रीमेक है, जिसके लिए एक्टर को तो नेशनल अवॉर्ड भी मिला। मगर अक्षय कुमार की 100 करोड़ के बजट में बनी यह फिल्म अपनी लागत भी नहीं निकाल सकी। सीधा सा मतलब है कि दर्शकों ने अक्षय को रिएक्ट कर दिया। अक्षय कुमार अपनी सक्सेस का क्रेडिट अपने अनुशासन और काम के प्रति लगन को देते हैं। वह एक टाइम टेबल फॉलो करते हैं। और मानसिक-शारीरिक रूप से फिट रहने पर जोर देते हैं।

अक्षय कुमार की लगातार कई फिल्में फ्लॉप हुई, जिसे लेकर कई तरह के कयास लगाए गए। लेकिन, अक्षय के साथ कई फिल्में बना चुके डायरेक्टर अनीस बज्मी का सोच कुछ अलग है। उन्होंने एक इंटरव्यू में अक्षय कुमार की तारीफ करते हुए कहा कि वे बहुत ही टैलेंटेड एक्टर हैं। जो उनके साथ हो रहा, वो हर कलाकार के साथ होता है। कभी फिल्में चलती हैं कभी नहीं। वे डांस कर सकते हैं, कॉमेडी कर सकते हैं, एक्शन में भी उनका कोई जोड़ नहीं। कहने का आशय यह कि वे कंप्लीट एक्टर हैं। लगता है कि अक्षय कई बार गलत लोगों को चुन लेते हैं, जो उनके टैलेंट का सही इस्तेमाल नहीं कर पाते और न उनके टैलेंट के साथ न्याय कर पाते हैं। अनीस बज्मी ने अक्षय कुमार के साथ सिंह इज किंग, वेलकम और 'थैंक्यू' जैसी फ़िल्में बनाई। उन्होंने इस कलाकार के टैलेंट का पूरा इस्तेमाल किया। यही कारण है कि इन फिल्मों को दर्शकों ने पसंद किया।

अक्षय के साथ भी वही हो रहा, जो अमूमन हर कलाकार के साथ होता है या हुआ है। हिट और फ्लॉप का दौर सभी के साथ चलता है। अक्षय उससे अलहदा नहीं रहे। उनका करियर हमेशा ट्रैक से चढ़ता-उतरता रहा। किंतु, कई बार उनके कुछ फैसले उन्हीं के खिलाफ चले जाते हैं। ऐसे में नुकसान खुद उन्हें उठाना पड़ा। वे कई ऐसी फ़िल्में कर लेते हैं, जो उन्हें नहीं करना था। यही वजह है कि उनकी फ़िल्में फ्लॉप हो रही है। फ्लॉप के इस दौर में भी अक्षय कुमार के पास फ़िलहाल करीब 10 फिल्में हैं। इनमें सिंघम अगेन, स्काई फोर्स, वेलकम टू द जंगल, कन्नप्पा, शंकरा और 'हेरा फेरी-3' जैसी फिल्में हैं। इसके अलावा एक मराठी फिल्म भी है। अक्षय कुमार अच्छी कॉमेडी करते हैं, एक्शन में भी कम नहीं हैं, रोमांस भी करते हैं और पेट्रियोटिक भूमिकाओं में भी दिखाई देते हैं। अब बॉक्स ऑफिस पर उनका असर दमदार नहीं रहा। बड़े मियां छोटे मियां, मिशन रानीगंज, रामसेतु, सम्राट पृथ्वीराज, बच्चन पांडे और 'सरफिरा' जैसी फिल्में इतनी बुरी नहीं थी कि फ्लॉप हो, पर हो गई। फ्लॉप की लम्बी कतार के बावजूद अक्षय कुमार के पास काम की कमी नहीं। क्या कारण है कि लगातार फ्लॉप के बाद भी अक्षय के पास फिल्मों की लाइन लगी है! इसके पीछे भी कुछ खास कारण गिनाए जा सकते हैं।

अक्षय की कई फ़िल्में सीक्वल हैं। यानी उसी नाम से पहले फिल्म आ चुकी है और उसकी अगली कहानी पर फिर फिल्म आ रही है। यदि वे पिछली फिल्म में लीड रोल में थे, तो तय है कि अगली में भी होंगे। ऐसी स्थिति में कलाकार को बदला नहीं जा सकता। अभी अक्षय के पास जो फ़िल्में हैं उनमें 4-5 तो सीक्वल हैं। इनमें हेराफेरी-3, वेलकम टू द जंगल और सिंघम अगेन जैसी फ़िल्में है। आज के दौर में भी एक्शन फिल्मों को पसंद करने वालों की कमी नहीं है। यदि किसी से एक्शन हीरो की बात जाए तो निश्चित रूप से अक्षय का ही नाम आएगा। इसके अलावा दर्शक रितिक रोशन, टाइगर श्रॉफ और सलमान का नाम लेंगे। लोग यह भी जानते हैं कि अक्षय कई एक्शन सीन खुद करते हैं। वे बॉडी डबल का इस्तेमाल नहीं करते। वे मार्शल आर्ट में भी पारंगत हैं। ये भी कारण है कि फ्लॉप होकर भी उनके पास फिल्मों की कमी नहीं है।

अपनी असफलता के बारे में अक्षय कुमार का कहना है कि इस असफलता का भी सकारात्मक पहलू देखना और सीखना होगा। क्योंकि, हर असफलता आपको सफलता के मायने सिखाती है और इसके लिए आपकी भूख को और भी बढ़ाती है। सौभाग्य से मैंने अपने करियर में पहले ही इससे निपटना सीख लिया था। यह आपको दुख पहुंचाता और इफेक्ट भी करता है, लेकिन इससे फिल्म की किस्मत नहीं बदलेगी। अक्षय कुमार ने आगे कहा कि अब ये आपके कंट्रोल में नहीं है। आपके बस में तो बस यही है कि आप कड़ी मेहनत करें। खुद को और सुधारें और अगली फिल्म के लिए खुद को झोंक दें। अपना सब कुछ दे दें। मैं ऐसे ही अपनी एनर्जी को इन्वेस्ट करता हूं और अगली फिल्म के लिए आगे बढ़ता हूं। मैं अपनी ताकत सही जगह पर लगाता हूं, जहां इसके सही मायने हैं। कोविड-19 के बाद आए दर्शक अब सब फिल्में नहीं देखते। वे ज्यादा सिलेक्टिव हो गए हैं। अब मैं कंटेंट को लेकर और ज्यादा सतर्क हो गया हूं। अब ये देखना पड़ता है कि अगर ये करूंगा तो क्या दर्शक थिएटर आएंगे या नहीं। वह दर्शकों को सिर्फ एंटरटेन न करे, बल्कि दर्शकों से गहराई से भी जुड़े।

अक्षय की एक खासियत है कि वे कभी टूटे नहीं है। इस वजह है कि उनकी फ़िल्में पहली बार फ्लॉप नहीं हो रही। पहले भी ऐसा दौर आ चुका है, जब उनकी कई फिल्में फ्लॉप हुई। उनकी सिर्फ अकेले नायक वाली फ़िल्में ही नहीं, ऐसी फ़िल्में भी नहीं चल रही जो मल्टी स्टारर हैं। अक्षय ने अपनी फ्लॉप वाली छवि को पहले भी तोड़ा और उनकी फ़िल्में हिट हुई है। अक्षय अकसर प्रयोगात्मक फ़िल्में करते रहे हैं, जो सामान्य से अलग होती है। लेकिन, फिर भी ऐसी फ़िल्में करते रहते हैं। अतरंगी रे, तीस मार खां और 'पृथ्वीराज' जैसी फिल्में ऐसी। 'ओएमजी 2' को भी प्रयोगात्मक दौर की फिल्मों में गिना सकता है। ऐसी फिल्मों को स्वीकारने की जिद भी कई बार अक्षय की नाकामयाबी का कारण बनी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बर्थडे पर अक्षय बिल्ली की तरह दूध पीते दिखे

अक्षय कुमार 9 सितंबर के दिन 57 साल के हो गए। अक्षय कुमार ने दो दिन पहले ही ऐलान किया था कि वे अपने बर्थडे पर कुछ बड़ा अनाउंस करने वाले हैं। अब एक्टर ने स इंतजार को पूरी तरह खत्म कर दिया है। लोगों ने अंदाजा लगा लिया था कि अक्षय कुमार अपनी कोई नई फिल्म का ऐलान करने वाले हैं और ऐसा ही हुआ। अभिनेता ने अपने बर्थडे के मौके पर नई फिल्म का ऐलान कर दिया, जिसमें हॉरर और कॉमेडी का तड़का लगने वाले हैं। अक्षय कुमार ने 14 साल बाद निर्देशन प्रियदर्शन से हाथ मिलाया और अब वे उनके निर्देशन में बन रही फिल्म 'भूत बंगला' में नजर आएंगे, जिसका टीजर भी आ गया है।

अक्षय कुमार ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिल्म 'भूत बंगला' का टीजर जारी किया, जो काफी मजेदार है। इस हॉरर कॉमेडी फिल्म के टीजर में अक्षय कुमार बिल्लियों की तरह दूध पीते दिख रहे हैं, जो टीजर का सबसे ज्यादा फनी पार्ट है। इस टीजर में देखा जा सकता है कि शुरुआत में अमावस्या का चांद दिखाया जाता है और फिर एक काली बिल्ली होती है, जो अपनी पूंछ को हवा में लहरा रही है। इसके साथ सीधे अक्षय कुमार को दिखाया जाता है, जो हाथ में कटोरी पकड़ी बिल्लियों की तरह दूध पी रहे हैं और अक्षय के कंधे पर वही काली बिल्ली बैठी है।

अक्षय के बैकग्राउंड में एक भूत बंगला है। इस टीजर के साथ अक्षय कुमार ने लिखा, 'मेरे जन्मदिन पर आपके प्यार के लिए शुक्रिया। इस साल का जश्न 'भूत बंगला' के फर्स्ट लुक के साथ। मैं 14 साल बाद प्रियदर्शन के साथ फिर से जुड़ने के लिए काफी ज्यादा एक्साइटेड हूं। इस सहयोग को काफी समय हो गया है। इस अविश्वसनीय यात्रा को आप सभी के साथ साझा करने के लिए इंतजार नहीं कर सकता। जादू के लिए बने रहें।'

बॉक्स ऑफिस की रेस जीतता लंगड़ा घोड़ा

अशोक जोशी

जिन्हें लगता है कि अच्छी फिल्म बनाने के लिए बड़ा बजट, विदेशी लोकेशंस और बड़े कलाकार होना चाहिए, उन्हें 'स्त्री-2' ने आईना दिखा दिया। सिर्फ 60 करोड़ की लागत में बनी इस फिल्म ने देश में 600 करोड़ और ओवरसीज में

900 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया। अभी कमाई की दुकान बंद नहीं हुई। ऐसे कारनामे इससे पहले दोस्ती, जय संतोषी मां, कहानी, नो वन किल्ड जेसिका और 'भेजा फ्राई' जैसी फ़िल्में भी कर चुकी है। राजश्री फिल्म्स को तो कम बजट की फिल्मों से मोटी कमाई करने में महारथ हासिल है।

प्र घुड़दौड़ के मैदान में भले ही लंगड़े घोड़े को कमजोर और गोली मारने लायक समझा जाता हो, लेकिन हिंदी सिनेमा के बॉक्स आफिस की दौड़ में मोटे ताजे घोड़े की तुलना में कभी-कभी लंगडा घोड़ा भी रफ्तार पकड़ते हुए आगे निकल जाता है। इस समय बॉलीवुड में यही सब कुछ हो रहा है। 55.60 करोड़ रुपए की लागत में बनी श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव अभिनीत अमर कौशिक की फिल्म 'स्त्री-2' ने अपने बजट से 150 प्रतिशत ज्यादा कमाई कर 900 करोड की कुल कमाई का आंकडा पार लिया। देश में ही 600 करोड़ कमाकर सबसे ज्यादा कमाई वाली फिल्म बन गई। अब ये हजार करोड रूपए के ऐतिहासिक आंकडे की तरफ तेजी से बढ़ती जा रही है। इतना ही नहीं, यह पहली ऐसी हिंदी फिल्म भी है जो लगातार 50 दिनों से करोड़ों का कारोबार कर रही है।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ। हिंदी सिनेमा में छोटी फिल्मों की बड़ी सफलता का इतिहास 1964 से अभी तक कई बार दोहराया जा चुका है। इसकी शुरुआत छठे दशक में तब हुई जब राज कपूर की विदेशी लोकेशंस पर करोड़ों की लागत में फिल्माई गई म्यूजिकल हिट 'संगम' को दो अपरिचित कलाकारों की दोस्ती पर बनी राजश्री प्रोडक्शन्स की ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म 'दोस्ती' ने बजट के अनुपात में कमाई की दौड़ में पीछे छोड़ दिया था। मजे की बात है कि संगम भी राजकपूर और राजेन्द्र कुमार की दोस्ती पर आधारित रंगीन फिल्म थी तो दोस्ती में अंधे और लंगड़े दोस्तों की कहानी थी। इसके बाद 1975 में बहुसितारा बडे बजट की फिल्म 'शोले' के मुकाबले प्रदर्शन को मोहताज कम बजट वाली 'जय संतोषी मां' ने दम दिखाते हुए कमाई के मामलों में न केवल 'शोले' को पछाड दिया था बल्कि निर्माण बजट से 100 गुना ज्यादा कमाई करने का करिश्मा भी दिखाया।

साउथ हो या फिर बॉलीवुड आज फिल्में बनाने में पैसा पानी की तरह बहाया जाता है। एक-एक सीन को शूट करने में फिल्म मेकर्स करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। हीरो-हीरोइन के कपड़ों से लेकर गानों और फीस पर मोटी रकम खर्च की जाती है। बावजूद इसके कई फिल्में

बॉक्स ऑफिस पर पिट जाती हैं। किसी भी फिल्म पर मोटी रकम खर्च किया जाना, इस बात की गारंटी नहीं है कि वो फिल्म हिट होगी। एक फिल्म अच्छे कंटेंट और दमदार एक्टिंग के दम पर ही चलती है। फिर चाहे वह एक कमरे या फिर किसी गली.मोहल्ले में ही शूट क्यों न की गई हो।

बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्मों के उदाहरण मौजूद हैं, जिन्हें बनाने में 100 करोड़ से ज्यादा खर्च हुए और वो बुरी तरह फ्लॉप रहीं। पर ऐसी भी फिल्मों की फेहरिस्त भी कम नहीं, जिन्हें 10 करोड़ से भी कम के बजट में बनाया गया और जब वो रिलीज हुई तो बॉक्स ऑफिस पर छप्परफाड़ कमाई की। कहानी और कलाकार अच्छे हों तो फिल्म बॉक्स ऑफिस पर धमाका कर सकती है। इसका उदाहरण फिल्म 'भेजा फ्राई' है। 2007 में रिलीज हुई यह फिल्म सिर्फ 60 लाख में बनी थी, पर रिलीज होने पर इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 18 करोड़ से ज्यादा की कमाई की। इस फिल्म को बाद में हॉलीवुड में 'डिनर फार श्मक्सक' के नाम से बनाया गया था। साल 2008 में मुंबई हमलों से प्रेरित होकर बनी फिल्म 'ए वेडनेस डे' महज पांच करोड़ में बनकर तैयार हुई थी। इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह, अनुपम खेर और जिम्मी शेरगिल मुख्य भूमिका में थे। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 30 करोड़ की कमाई की। इस थ्रिलर ड्रामा फिल्म में दिखाया गया है कि एक आम आदमी कैसे अपने जैसे लोगों के लिए सरकार से लड़कर अपनों की मौत का बदला लेता है।

इसी तरह 10 करोड़ के बजट में बनी आमिर खान की फिल्म 'पीपली लाइव' ने बॉक्स ऑफिस पर 48 करोड़ की कमाई की थी। यह फिल्म 2010 में रिलीज हुई थी। फिल्म में किसानों की माली हालत और आत्महत्या के बारे में दिखाया गया था। मॉडल जेसिका लाल की जिंदगी पर बनी फिल्म 'नो वन किल्ड जेसिका' 9 करोड़ के बजट में बनी थी। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 46 करोड़ की कमाई की। फिल्म में विद्या बालन और रानी मुखर्जी लीड रोल में थीं। 2011 में रिलीज हुई 'नो वन किल्ड जेसिका' को राज कुमार गुप्ता ने डायरेक्ट किया था। यह साल 2011 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में शामिल रही थी।

इसके एक साल बाद प्रदर्शित विद्या बालन की फिल्म 'कहानी' भी ऐसी ही है।यह फिल्म करीब 8 करोड़ के बजट में बनी थी, पर इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 104 करोड़ की कमाई की। यही नहीं, सुजॉय घोष द्वारा डायरेक्ट की गई इस फिल्म ने 3 नेशनल अवॉर्ड और 5 फिल्मफेयर अवॉर्ड जीते थे। इसके साथ प्रदर्शित दूसरी छोटे बजट की फिल्म 'पानसिंह सिंह तोमर' की लागत भी बजट 8 करोड थी। इरफान खान स्टारर इस फिल्म ने रिलीज होने पर 19 करोड़ की कमाई की थी। इस फिल्म में निभाए पान सिंह तोमर के किरदार के लिए इरफान को बेस्ट एक्टर का नेशनल अवॉर्ड मिला था। इसने बेस्ट फीचर फिल्म का नेशनल अवॉर्ड भी जीता। देखा जाए तो 2012 का साल छोटे बजट की फिल्मों के लिए सबसे अच्छा रहा। इसी साल आयुष्मान खुराना की डेब्यू फिल्म 'विक्की डोनर' 5 करोड रूपए के बजट में बनीं, पर तगड़ी कमाई करने वाली फिल्म बनकर 67 करोड़ से झोली भर ली।

इसी तरह बॉलीवुड में लंगडा घोड़ा मानी जाने वाली 'तेरे बिन लादेन' जिसे पाकिस्तान में प्रतिबंधित किया गया था, उसने 5 करोड़ की लागत के मुकाबले दुनियाभर में साढे 11 करोड रूपए कमाए। संजय मिश्रा की 'फंस गए रे ओबामा' को बनाने में लगे थे 6 करोड़ रुपए और यह फिल्म निर्माता की झोली में 15 करोड रूपए डाल गई। प्रकाश झा ने महिलाओं पर बेस्ड बोल्ड मूवी 'लिपस्टिक अंडर माय बुर्का' को प्रोड्यूस किया था। इस फिल्म को बनाने में लगे थे 6 करोड़ रु, जबकि बॉक्स ऑफिस पर इसकी कमाई रही 21 करोड़।

बॉक्स आफिस के रेसकोर्स में लंगड़े घोड़ों को उतारने में राजश्री फिल्म्स का कीर्तिमान सबसे बढिया रहा ,उसने नए कलाकारों, नए संगीतकारों और नए गायको को लेकर बनाई फिल्म गीत गाता चल, नदिया के पार, दुल्हन वही जो पिया को भाए, तूफान, एजेंट विनोद, अंखियों के झरोखे से, उस पार और 'चितचोर' सहित दर्जनों कम बजट की फिल्मों से सफलता के कीर्तिमान बनाए। उनकी तर्ज पर बासु चटर्जी और ह्रषिकेश मुखर्जी ने भी लंगड़े घोड़ों को दौडाने का कारनामा कई बार किया।

हंसोऽऽ...हंसोऽऽ... समझ नहीं आ रहा!

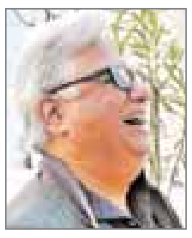

प्रकाश पुरोहित

बहुत पुरानी बात है..., इंदौर के स्टार-लिट में तब अंग्रेजी फिल्में ही लगती थीं। तब गिनी-चुनी कारें थीं और ये स्टार-लिट में ही नजर आती थीं। कुछ तो सिनेमा और कार देखने ही जाते थे और ज्यादातर दिखाने जाते थे कि अंग्रेजी फिल्म देख कर निकल रहे हैं। ऐसे भी थे, जो फिल्म खत्म होने के ठीक पहले सिनेमाघर में घुसते थे और पिक्चर छूटने पर यूं उबासियां लेते निकलते थे, जैसे पूरी अंग्रेजी फिल्म देख कर निकले हों। सड़क चलते लोग इन्हें हसरत से देखते थे कि हाय, हमें भी अंग्रेजी आती होती! अंग्रेजी नहीं आते हुए भी इंग्लिश फिल्म वैसी ही है, जैसे टेलिप्राम्पटर पर बगैर समझे भाषण पढ़ना! अंग्रेजी फिल्मों में रोने-धोने का बड़ा रोल नहीं होता है, हंसना ही साबित करता है कि आप अंग्रेजी समझ रहे हैं या नहीं। यह समझने के लिए ध्यान, योग, यानी जितनी भी कसरतें हैं, लगानी पड़ती हैं।

तब पर्दे पर कम और आसपास वालों के चेहरों पर ज्यादा समय देना पड़ता, क्योंकि पता नहीं जानकार किस बात पर हंस पड़े और अपन बकव्वा जैसा मुंह फाड़े देखते ही रह जाएं। उनके चेहरे पर हंसी आने से पहले अपन को यह समझ आ जाना चाहिए कि हंसी का मौका मुंह लगने वाला है। यह महारत कोई एकाध बार में हासिल नहीं होती थी। इसके भी उस्ताद होते थे, जो सिखाते तो कुछ नहीं थे, लेकिन देख-देख कर सीखना होता था, एकलव्य की तरह।

आम जनता तो वैसे ही अंग्रेजी के नाम पर बिदकती थी, ऊपर से उन दिनों अंग्रेजी हटाओ आंदोलन अपने पूरे शबाब पर था, क्योंकि ज्यादातर को अंग्रेजी नहीं आती थी, इसलिए

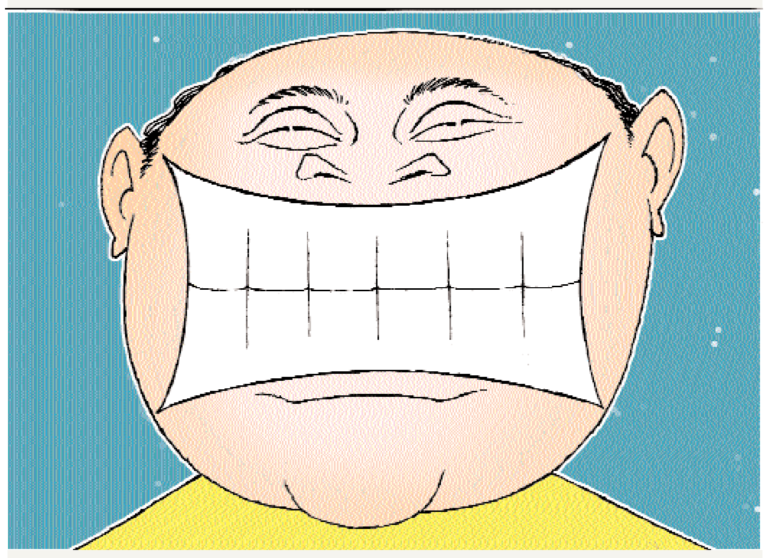

विरोध करना आ गया था। अंग्रेजी फिल्म में तब डबिंग या सब-टाइटल का आविष्कार नहीं हुआ था तो जो है अंग्रेजी में है, समझ आए तो बैठो, नहीं आए तो पास वाले के रिएक्शन पर नजर रखो। अंग्रेजी फिल्म में अंतरंग दृश्यों का बड़ा आकर्षण होता था और उसके लिए किसी भाषा की जरूरत नहीं होती थी। तब हिंदी नाम भी ऐसे-ऐसे होते थे कि अकेले में भी पढ़ने में हिचक हो, जैसे 'आग लगे जवानी में', 'वासना की पुजारिन', 'कातिल प्रेमिका।' वैसे ज्यादातर फिल्मों के एक ही नाम होते थे, फिर इ टी ही क्यों ना लगी हो या टॉवरिंग इन्फर्नो ही चल रही हो, हिंदी में तो 'मचलती जवानी' ही होता था।

अब थियेटर में आ तो गए हैं, मगर पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा है कि सामने पर्दे पर क्या बोला जा रहा है। ऐसे समय में अति-सतर्कता जरूरी हो जाती थी। पहली बात तो यही कि ताड़ना होता था कि इस भीड़ में जेनुइन दर्शक कौन है, यानी जो वाकई अंग्रेजी समझता हो और जो हिंदी नाम पढ़ कर अंदर नहीं आया है। अब एक नजर सामने पर्दे पर और दूसरी उस बंदे पर, जो फिल्म देख कर समझ रहा है और ठहाके भी लगा रहा है। रियाज से आप क्या हासिल नहीं कर सकते, सिवाय अंग्रेजी के। हफ्ते में एक बार भी स्टार-लिट चले गए तो तीन-चार माह में आप इतने पारंगत हो जाते हैं कि अंग्रेज का फादर भी नहीं पकड़ सकता कि यहां अंग्रेजी में शून्य बटे सन्नाटा है। जब एक बार ओवर कांफिडेंस आ जाता है तो फिर अंग्रेजी फिल्मों के स्थायी दर्शक हो जाते हैं, बल्कि ये भी हो सकता है कि जो अभी-अभी इस फील्ड में आए हैं, उन्हें आप गुरुदेव की तरह लगने लगें।

शुरू में पास वाले अंग्रेजी दा को थोड़ा शक जरूर हो सकता है कि पास से ये ठहाका कुछ सेकंड्स की देरी से ही क्यों छूटता है, जैसे दीवाली के पटाखे की रोशनी पहले नजर आती है और धमाका बाद में होता है, लेकिन ये उसकी चिंता है, अपन को तो अपनी रियाज पर ध्यान देना होता है। 'करत-करत अभ्यास के', हिंदी में तो यही मुहावरा है, अंग्रेजी का पता नहीं। ऐसी महारत से अनजान दोस्तों के साथ जब थियेटर जाते हैं तो आपका रुतबा अपने आप, फिल्म के आगे बढ़ने के साथ, बढ़ता जाता है। सभी हसरत से देखते हैं कि हम तो यूं ही समझते थे, ये तो अंग्रेजी फिल्मों का बड़ा जानकार है, ठप्पा जम जाता है सर्किल में। पढ़ने को कोई चार लाइन दे दे तो बगलें झांकने लगे, लेकिन चार घंटे की अंग्रेजी फिल्म एक झटके में निपटा देते।

ये अंग्रेजी फिल्में और हंसने की बातें आज इतने बरस बाद इसलिए याद आ रही हैं कि हमारे प्रधानमंत्री को विदेशी नेताओं के साथ देखता हूं कि हर समय हंसते ही रहते हैं, जबकि सामने वाला इस कदर बुक्का फाड़ कर हंस नहीं रहा होता है। हमारे वाले कभी बोलते तो नजर नहीं आते हैं, लेकिन या तो गले मिलते पीठ थपथपाते दिखते हैं या फिर जोर से ठहाका लगाते। यह भी लगता है कि ये बाहर हंसने के लिए ही जाते हैं क्या, कि इन्हें देश में लोग हंसने का मौका इसलिए नहीं देते हैं कि लोग ही हंसने को तरसते रहते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि अंग्रेजी में जुबान या कान तंग हैं, लेकिन ऐसी क्या चुटकुलेबाजी होती है कि पीएम हर समय ठहाके ही लगाते रहते हैं, जबकि सामने वाला मुस्कुरा कर ही रह जाता है। यह दृश्य देख कर मुझे तो हर बार यूं ही लगता है, जैसे स्टार-लिट में बैठा हूं और पास वाले का चेहरा तक रहा हूं कि अब हंसा, कि तब हंसा!

सेहत

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पर्यावरण के स्वास्थ्य में हमारी सेहत की चाबी

हर साल दुनियाभर में 26 सितंबर को विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य है, पर्यावरणीय स्वास्थ्य का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जागरूकता पैदा करना। हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ रहने के लिए पर्यावरण को बचाना कितना जरूरी है। जिस जगह हम रहते हैं, वहां पर्यावरण से जुड़ी हर चीज की देखभाल करना हर व्यक्ति का फर्ज होना चाहिए। हर बीमारी का उपचार प्रकृति एवं पर्यावरण में है। इस दिवस की 2024 की थीम है पर्यावरण स्वास्थ्य, आपदा जोखिम न्यूनीकरण और जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन के माध्यम से लचीले समुदायों का निर्माण।' प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण और प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिये गंभीर खतरा है। मनुष्य को घेर रही तरह-तरह की बीमारियों का सबसे बड़ा कारण प्रकृति के प्रति लापरवाही एवं उपेक्षा है। ग्लोबल वार्मिंग, वनों की कटाई, नदियों में गंदगी फैलाना, पशुओं को हानि पहुंचाना आदि पर्यावरणीय स्वास्थ्य के नुकसान पहुंचाने के कई कारण हैं। अनियोजित औद्योगीकरण, बढ़ता प्रदूषण, घटते रेगिस्तान एवं ग्लेशियर, नदियों के जलस्तर में गिरावट, पर्यावरण विनाश, प्रकृति के शोषण और इनके दुरुपयोग के प्रति असंवेदनशीलता पूरे विश्व को एक बड़े संकट की ओर ले जा रही है। इन संकटों के बीच प्राकृतिक पर्यावरण, वायु, जल, भोजन, आवास और समुदायों की गुणवत्ता में सुधार को बढ़ावा देने के लिये इस दिवस की विशेष प्रासंगिकता है।

26 सितंबर, 2011 को इंडोनेशिया में आयोजित शिखर सम्मेलन में इस दिन की स्थापना हुई थी। यह दिवस लोगों को पर्यावरण के कई पहलुओं के बारे में शिक्षित करने का एक साधन है जो किसी न किसी तरह से स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकते हैं जैसे कि हवा और पानी की गुणवत्ता, ठोस अपशिष्ट निपटान, और खतरनाक पदार्थों का प्रभाव। यह दिवस मनुष्य स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका को बढ़ावा देने और सभी निवासियों के जीवन के लिए आवश्यक पर्यावरण की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त साधनों की खोज से जुड़ा है। हानिकारक पर्यावरणीय कारक श्वसन पथ के संक्रमण या जलजनित रोगों सहित विभिन्न गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ाती हैं। जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिये मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को समाप्त करने, नवीकरणीय ऊर्जा, कुशल स्वास्थ्यवर्द्धक ऊर्जा उपयोग और वनीकरण पर आधारित हैं। शमन का अर्थ है लोगों के व्यवहार को बदलना और सूखे का सामना करने वाली फसलों को विकसित करना और सिंचाई प्रणालियों में सुधार जैसे कठोर और नरम उपायों के माध्यम से उपयुक्त जलवायु के लिए पर्यावरण में आवश्यक संशोधन करना।

विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस इस बात की याद दिलाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल प्राकृतिक दुनिया का संरक्षण नहीं है, बल्कि लोगों के स्वास्थ्य और भविष्य की सुरक्षा है। इसलिए, जब लोग समुदायों में एक साथ मिलकर काम करते हैं, तो पर्यावरण के कारण होने वाली आपदाओं के बावजूद उन्हें स्वस्थ जीवन जीने में सक्षम बनाने के लिए अच्छे उपायों को अपनाना आसान हो जाता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इस दिन हम रुकें और इस बात पर विचार करें कि हम पर्यावरणीय स्वास्थ्य को कैसे बेहतर बना सकते हैं और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए और अधिक प्रयास कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए हमें पर्यावरणीय स्वास्थ्य को सभी के लिए बेहतर और स्वस्थ भविष्य के मार्ग के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। यह दिन विशेष रूप से आधुनिक वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और उन प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो दुनिया को लोगों और पर्यावरण दोनों के लिए एक बेहतर स्थान बनाने में मदद कर सकते हैं। इस दिन को सेमिनार, कार्यशाला, मीटिंग आदि जैसी विभिन्न गतिविधियों द्वारा चिह्नित किया जाता है। यह लोगों, संगठनों और सरकारों को एक साथ आने और समुदाय के बेहतर और अधिक टिकाऊ रूपों को बनाने के लिए रणनीतियों पर विचार करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह दिन पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को एक दूसरे से निकटता से जुड़ा हुआ मानता है।

यह उल्लेखनीय है कि प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियाँ कई बीमारियों का मूल कारण हैं, उदाहरण के लिए, श्वसन रोग, जलजनित रोग और पुरानी बीमारियाँ। विशेषतः वायु प्रदूषण जानलेवा होता जा रहा है, जीवन की औसत आयु को कम कर रहा है। दरअसल, हमारे नीति-नियंता प्रदूषण कम करने के लिये नागरिकों को जागरूक करने में भी विफल रहे हैं। हमारी सुख-सुविधा की ललक ने भी वायु प्रदूषण बढ़ाया है। अब चाहे गाहे-बगाहे होने वाली आतिशबाजी हो, प्रतिबंध के बावजूद पराली जलाना हो, या फिर सार्वजनिक परिवहन सेवा से परहेज हो, तमाम कारण प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। कल्पना कीजिए बच्चों और दमा, एलर्जी व अन्य सांस के रोगों से जूझने वाले लोगों पर इस प्रदूषण का कितना घातक असर होगा? यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की हालिया रिपोर्ट फिक्र बढ़ाती है जिसमें कहा गया कि वायु प्रदूषण के चलते भारत में जीवन प्रत्याशा में गिरावट आ रही है।

दुनिया की आबादी आठ अरब से अधिक हो चुकी है। इसमें से लगभग आधे लोगों को साल में कम से कम एक महीने पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत वृद्धि हुई है और सूखे की अवधि में 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। पानी के संरक्षण और समुचित उपलब्धता को सुनिश्चित कर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या का भी समाधान निकाल सकते हैं। पैकेट और बोतल बन्द पानी आज विकास के प्रतीकचिह्न बनते जा रहे हैं और अपने संसाधनों के प्रति हमारी लापरवाही अपनी मूलभूत आवश्यकता को बाजारवाद के हवाले कर देने की राह आसान कर रही है। विशेषज्ञों ने जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है, जिन्हें भविष्य में प्रबंधित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। सदियों से निर्मल जल का स्त्रोत बनी रहीं नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जल संचयन तंत्र बिगड़ रहा है, और भू-जल स्तर लगातार घट रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी तीसरी पारी में अब प्रकृति-पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण-मुक्ति के साथ बढ़ते रेगिस्तान को रोकने के लिये सक्रिय हैं। बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने एवं पर्यावरण की रक्षा को लेकर प्रधानमंत्री का संकल्प एक शुभ संकेत है, नये भारत के अभ्युदय का प्रतीक है। सरकार की नीतियों में जल, जंगल, जमीन एवं जीवन की उन्नत संभावनाएं और भी प्रखर रूप में झलक रही है।

मनुष्य का लोभ एवं संवेदनहीनता भी त्रासदी की हद तक बढ़ी है, जो वन्यजीवों, पक्षियों, प्रकृति एवं पर्यावरण के असंतुलन एवं विनाश का बड़ा सबब बना है। मनुष्य के कार्य-व्यवहार से ऐसा मालूम होने लगा है, जैसे इस धरती पर जितना अधिकार उसका है, उतना किसी ओर का नहीं- न वृक्षों का, न पशुओं का, न पक्षियों का, न नदियों-पहाड़ों-तालाबों का। ये स्थितियां मनुष्य एवं पर्यावरण स्वास्थ्य को चौपट कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस को कहना पड़ा कि हमारी पृथ्वी एक तरह से जलवायु अराजकता की तरफ बढ़ रही है। उन्होंने यह चेतावनी भी दी कि इंसानी सभ्यता के सामने अब सिर्फ 'सहयोग करने या खत्म हो जाने' का विकल्प बचा है। विश्व के पर्यावरण पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है, उससे मुक्ति के लिये जागना होगा, संवेदनशील होना होगा।

मौसम का रंग ...

खाचरौद में रात 8.45 बजे बादलों की आमद के बीच आकाश में फैला प्रकाश आकर्षक था। फोटोः ऋतुराज बुड़ावनवाला

ऑस्कर में चमक रहा महिला-भास्कर!

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

सितंबर से ठंडक शुरू होती है, लेकिन ऑस्कर के गलियारों में गहमागहमी है। दुनिया की बेहतरीन फिल्म दावेदारी करती हैं। फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया पर कई बरस से सवाल लग रहे हैं। **'लंच बॉक्स'** का ऑस्कर तय था, लेकिन फेडरेशन ने ज्ञान कोरिया की **'द गुड रोड'** को भेज दिया। ऐसा ही **'आरआरआर'** के समय भी हुआ था, जब पैन नलिन की फिल्म **'चेल्लो शो'** ऑस्कर काबिल समझी। **'आरआरआर'** न सिर्फ दाखिल हुई बल्कि ऑस्कर भी लाई।

पायल कपाड़िया की फिल्म **'ऑल वी इमेजिन एज लाइट'** के बारे में तय था कि ऑस्कर जाएगी। कॉन फिल्म फेस्टिवल में तीस बरस बाद यह फिल्म न सिर्फ शामिल हुई बल्कि ग्रांप्री अवार्ड भी जीत कर आई। यह फिल्म फ्रांस की मदद से बनी

है और फ्रांस की तरफ से भी लिस्ट में शामिल किया था। इतना ही नहीं, रिलीज के लिए राणा दग्गुबाती ने मदद की थी। ऑस्कर में रिलीज फिल्म ही शामिल की जाती है और यह भी बड़ा कारण था कि अगस्त से लेकर आधे सितम्बर तक पायल का नाम गूंज रहा था। **'लापता लेडीज'** अच्छी फिल्म है और इसकी टीम भी धन-धान्य से मजबूत है। कैंपेन के लिए आमिर खान और किरण राव के पास सब साधन हैं! अंबानी के जियो स्टूडियो की टीम भी साथ लगी है। **'लापता लेडीज'** की पीठ पर कितने बड़े बिजनेस हाउस का हाथ है, इस बात से कोई खास फर्क नहीं पड़ता है। विधु विनोद चोपड़ा बताते हैं कि जब **'एकलव्य'** भेजी गई थी तो उनके पास खुद का सूट खरीदने के पैसे नहीं थे। जब रीमा दास की असमी फिल्म **'विलेज रॉकस्टार्स'** ऑस्कर गई, तब कौन धन्ना सेठ ने रीमा दास उर्फ वन वुमन आर्मी की मदद की थी। पायल की फिल्म हो या किरण राव की, खुशी है कि महिला निर्देशक की फिल्म नाम कर रही हैं।

मदर इंडिया (1957) पहली फिल्म थी, जो ऑस्कर गई थी, तब से **'लापता लेडीज'** तक का सफर भारतीय फिल्मों और उनमें महिलाओं की बढ़ती हिस्सेदारी के लिए खास है। यूके और भारत के सहयोग से बनी फिल्म **'संतोष'** भी ऑस्कर की दावेदार है, इसे यूके ने ऑस्कर एंट्री के झंडे तले भेजा है।